जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

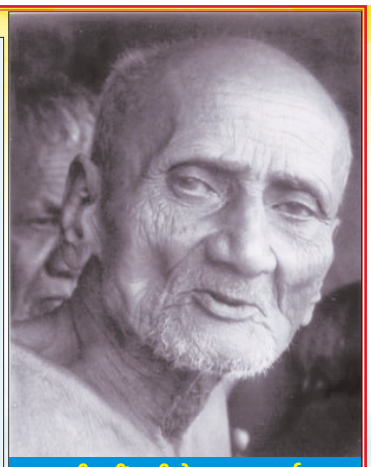

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

जैन धर्म और समाज की संक्रमणता से रक्षार्थ

08

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 36 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 15 जुलाई 2024, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज का 35वां आचार्य पदारोहण दिवस

संयम महोत्सव के रूप में मनाया गया

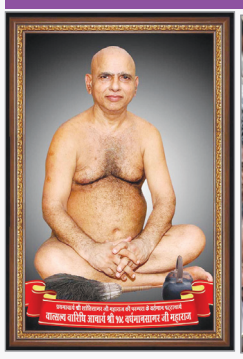

बांसवाड़ा में 7 जुलाई को आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज का 35वां आचार्य पदारोहण समारोह मनाया गया। इसमें पाद प्रक्षालन का सौभाग्य परम मुनि भक्त, दानवीर श्रेष्ठी, दृढ़ संस्कारवान, समाज हितैषी, जैन गजट में प्रकाशित वर्धमान सूत्र के पुण्यार्जक आनन्दपुर कालू के श्री महावीर जी बोहरा ने किया। राजेन्द्र जी कटारिया, संजय पापड़ीवाल, सुरेश जी सबलावत यह वो नाम हैं जो आचार्यश्री के लिए तन, मन, धन से समर्पित हैं।

बांसवाड़ा में बाहुबली कॉलोनी में विराजमान आचार्य शांतिसागर महाराज की अक्षुण्ण पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज का 35वां आचार्य पदारोहण दिवस संयम महोत्सव के रूप में मनाया गया। पारसोला, मूंगाना, धरियावद, कुशलगढ़, साबला, घाटोल, उदयपुर, किशनगढ़, इंदौर सहित मेवाड़-वागड़ के जैन श्रद्धालु इस आयोजन के साक्षी बने। प्रतिष्ठाचार्य हंसमुख जैन नंदनवन व पंडित भागचंद जैन के निर्देशन में संयम महोत्सव मनाया गया। महोत्सव में मंगल कलश बसंतलाल सर्राफ परिवार, चित्र अनावरण व दीप प्रज्जवलन सकल जैन समाज बांसवाड़ा एवं महावीर जैन आनंदपुर कालू ने आचार्य का पाद प्रक्षालन किया। सभी भक्त परिवार युवा व महिला मंडल द्वारा 35वें पदारोहण पर 35 द्रव्यों में संगीतमय पूजा की गई। इस अवसर पर आचार्य शांतिसागर आचार्य शताब्दी महोत्सव का पोस्टर विमोचन संजय पापड़ीवाल, राजेश शाह, सुंदरलाल डागरिया, प्रो. जय कुमार ने किया। इसके बाद वीणा दीदी, चारूकीर्ति भट्टारक श्रवणबेलगोला, आर्यिका माताजी, मुनि हितेंद्र सागर, मुनि पुण्यसागर सहित संघ ने विनयांजलि अर्पित की। आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन देते हुए कहा कि आज 35वां वर्षायोग है। 35 में 3 और 5 का अंक का योग 8 होता है 8 का अंक 8 कर्मों का सूचक है। सांसारिक प्राणी 8 कर्मों के संचय के कारण दुखी है। विषय और कषाय महान शत्रु हैं। उन्होंने मोक्ष का मार्ग बतलाते हुए कहा कि नेशनल और स्टेट हाईवे सड़क होती है।

नेशनल हाईवे महाव्रत व स्टेट हाईवे अणुव्रत है, जो मोक्ष का मार्ग बताते हैं। अपना वास्तविक मोक्ष घर के सुख के लिए त्याग व पुरूषार्थ कर जीवन में लाना होता है। कहा कि आज प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी प्रदीप भैया ने दीक्षा लेने के लिए याचना कर श्रीफल भेंट किया। दीक्षा संसार की हननी है। तीर्थंकर और आचार्य परमेष्ठी ने धर्म को प्रतिपादित किया है। पंच परमेष्ठी में अरिहंत सिद्ध भगवान के बाद आचार्य परमेष्ठी मध्य में आते हैं उनके बाद उपाध्याय, साधु परमेष्ठी होते हैं। आचार्य परमेष्ठी अरिहंत और सिद्ध भगवान को दिव्य देशना को उपाध्याय और साधु परमेष्ठी के और समाज को देकर मार्गदर्शक और पद प्रदर्शक होते हैं। धर्म शासन जीने की कला और परिभाषा बताता है। समाज अध्यक्ष महेंद्र बोरा, कमल सागरीय समाज प्रवक्ता महेंद्र कवलिया ने बताया कि आचार्य शांतिसागर जी ने मुनि मार्ग को पुनर्जीवित किया। कार्यक्रम में पारसोला, मूंगाना, धरियावद जैन समाज ने संघ को श्रीफल भेंट कर चातुर्मास का निवेदन किया। अंत में स्वामी वात्सल्य भोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

-शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
20 Sep, 3 Oct, 3 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
100% Pure Vegetarian Jain Food
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056
Email : vayudoottravels@gmail.com • Website: www.vayudoottravels.in

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

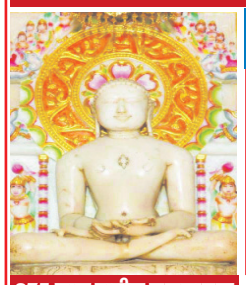

875 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 6:00 PM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्रः
मनीष जी गंगवाल
(कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957

Buy online on
jkcart.com

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

स्व. विद्या विनोद जी काला

की 26वीं पुण्यतिथि 21 जुलाई, 2024 पर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

**आप की स्मृतियां, आपकी छवि,
विस्मृत हो ना पाएगी।
आपका व्यवहार, आपकी बातें
सदैव याद आएंगी।।**

**अर्पित है आपको
अश्रु भरी भावांजलि,
देते हैं चरणों में आपको
हार्दिक श्रद्धांजलि।।**

**जन्म
1932**

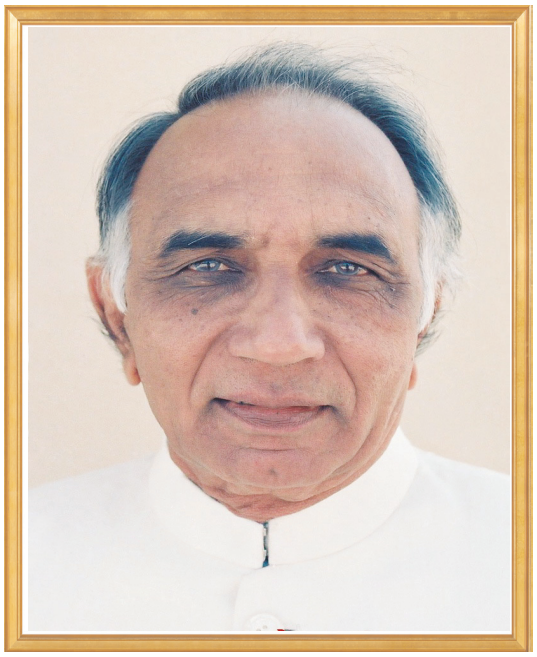

**स्वर्गवास
1998**

निर्भीक पत्रकार, प्रखर समाज सुधारक व लोकहित चिन्तक

स्व. विद्या विनोद काला

स्वप्नदृष्टा व संस्थापक प्रबन्ध न्यासी भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर

जीवन-ज्योति भले ही बुझ गई, प्रेरणा आलोक सदैव रहेगा....

करोड़ों की आबादी वाले इस संसार में यदा-कदा ऐसे कर्म-धन्य युग पुरूष जन्म लेते हैं,
जिनकी प्रेरणा और प्रतिबद्धता सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होती है।
जिनका संकल्पित साहस अदम्य होता है, जो अपनी कर्मठता से औरों को भी ऊर्जायित, प्रेरित करते हैं।
जो मशाल बनकर औरों का पथ आलोकित करते हैं तथा शाश्वत प्रेरणा पुंज बने रहते हैं।
आपकी यही प्रेरक, पथ प्रदर्शक अमिट छवि हमारे स्मृति पटल पर जीवंत रहेगी।

श्री विद्या विनोद काला मैमोरियल ट्रस्ट, जयपुर

संकलनः राजाबाबू गोधा, फागी, जैन गजट संवाददाता फागी एवं राजस्थान मो. 09460554501

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी के 86वें जन्म दिवस पर उनकी पुण्य स्मृति में

सूर्यपहाड़ (असम) में निर्मल भवन (गेस्ट हाउस) एवं सेठीजी के स्टेच्यू का लोकार्पण

राजकुमार जैन सेठी
महामंत्री- तीर्थ संरक्षिणी

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के 40 वर्षों तक अध्यक्ष रहे श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी का 86वां जन्म दिवस असम के सूर्यपहाड़ अतिशय क्षेत्र में 8 जुलाई 2024 को खूब धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम सूर्य पहाड़ अतिशय क्षेत्र के मंदिर में श्री भक्ताम्मर विधान का आयोजन किया गया जिसमें सेठी जी के परिवारीजनों के साथ बंगाईगांव से महावीर सोगानी, सुनील बगड़ा, मनोज कुमार सरावगी (मिन्टू), सुरेन्द्र गंगवाल, अनिल बाकलीवाल, दुधनोई से अजित चांदुवाड़, रिंकू चांदुवाड़, प्रदीप जैन, इंद्रा जैन, कृस्नई से राकेश पाण्डया, ग्वालपारा से जीवंधर, राजेन्द्र, नरेंद्र पाटनी, कैलाश जी पाण्डया, किरण पाण्डया, जितेंन्द्र, चैनरूप पाण्डया आदि विभिन्न स्थानों से पधारे हुये महानुभावों ने भक्ताम्मर विधान में भाग लिया। भक्ताम्मर विधान के बाद सेठी जी का जन्म दिवस मनाये जाने हेतु एक मीटिंग का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सूर्योदय अहिंसा दिगम्बर जैन तीर्थ सूर्य पहाड़ विकास समिति के अध्यक्ष महावीर जी गंगवाल ने की। बाहर से पधारे सभी उपस्थित पदाधिकारीगण, श्रावक श्राविकाओं को दुपट्टा, माला, तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

श्री महावीर जी गंगवाल ने अपने भाषण में सेठी जी के योगदान पर चर्चा की एवं सूर्य पहाड़ का शीघ्र ही विकास करके 5 वर्ष के भीतर सूर्यपहाड़ को विकसित अतिशय क्षेत्र बनाने की घोषणा की। उसके बाद तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी ने सूर्यपहाड़ का पूरा इतिहास 1975 से आज तक की जानकारी दी तथा सूर्य पहाड़ के विकास के लिये गुवाहाटी जैन समाज के अध्यक्ष से अनुरोध किया कि सूर्य पहाड़ अतिशय क्षेत्र का पूर्वांचल जैन समाज का सहयोग लेकर इसका विकास करें। श्री महावीर जी सेठी ने सूर्यपहाड़ में जो आदिनाथ की दो प्रतिमाएं है उनके नीचे लगे बोर्ड को ठीक कराना जरूरी है, की बात कही। श्री धर्मेन्द्र जैन सेठी ने महासभा को सूर्यपहाड़ के विकास में हर तरह का सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि सेठी जी की सूर्यपहाड़ में एक मंदिर बनाये जाने की भावना थी उसका काम होगा तो सेठी ट्रस्ट सहयोग देगा। उसके पश्चात निर्मल भवन का उद्घाटन श्री राजकुमार जैन सेठी राष्ट्रीय महामंत्री तीर्थ संरक्षिणी महासभा एवं सेठी जी के परिजनों द्वारा किया गया। निर्मल भवन में सेठी जी की फोटो भी लगायी गयी। इस अवसर पर सेठी परिवार से श्री महावीर सेठी, धर्मेन्द्र जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रिंकू जैन सेठी, आलोक जैन, सेठी जी की बहनें सरोज बाई, गीता बाई, मुनिया एवं संतोष बाई, सेठी जी की पुत्री श्रीमती कल्पना बाकलीवाल उपस्थित थीं। महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार छाबड़ा गुवाहाटी, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा लोअर असम के अध्यक्ष श्री महावीर गंगवाल, कार्याध्यक्ष मनोज कुमार सरावगी, मंत्री अजीत चांदुवाड़ ने सभी आयोजनों को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया। भवन के उद्घाटन के पश्चात स्व. निर्मल कुमार जी सेठी का स्टेच्यू सूर्यपहाड़ पर लगाया गया जिसका लोकार्पण तीर्थ संरक्षिणी महासभा के महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी, परमशिरोमणि संरक्षक श्री महावीर जी सेठी, धर्मेन्द्र जैन सेठी एवं मुनिया देवी के द्वारा किया गया। सभी उपस्थित लोगों ने सेठी जी को श्रृद्धा सुमन अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। तत्पश्चात सेठी परिवार द्वारा बाहर से पधारे सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। आये हुये सभी आगन्तुकों के लिये सेठी परिवार द्वारा वात्सल्य भोजन की व्यवस्था की गयी थी। वात्सल्य भोजन ग्रहण करने के पश्चात सभी ने अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। सभी आयोजनों में सूर्योदय अहिंसा दिगम्बर जैन तीर्थ सूर्य पहाड़ विकास समिति के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी सेठी का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री निरंजन जैन ने किया।

ॐ महावीराय नमः
जैन मंदिरों के आइटमों के लिए जयपुर का सबसे पुराना प्रतिष्ठान
नारायण सोयल S/O मांगीलाल सोयल
ए-27/28 श्याम पूरी, हीदा की मोरी, जयपुर, (राज.) 302003
चातुर्मास के पावन अवसर पर हमारे यहाँ वद महाराज श्री के पीछी मोरपंख, बेत, जूट की डोरी, चटाई उपलब्ध हैं।

फोन नं. 9660882020, 6376220017

सौरभ सागर वचन

शब्द छोटे-छोटे हो सकते हैं, लेकिन अर्थ कभी छोटा नहीं होता

-: नमनकर्ता :-

- राजूलाल जी बैनाडा, पचाला वाले जयपुर
- श्रीमती स्नेहलता सौगानी, जयपुर
- दिनेश चन्द कासलीवाल, जयपुर
- नीरज जैन, जयपुर
- श्रीमती रत्ना जैन(सुरजमल विहार, दिल्ली)
- श्रीमती ऊषा जैन, आगरा
- रमेश चन्द तिजारिया, जयपुर
- धर्मचंद पहाड़िया, जयपुर
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति
- प्रदीप जैन, मेरठ
- सारिका जैन, मेरठ

ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणास्रोत आचार्य सौरभ सागर जी जयपुर में विराजमान है।

संकलनः R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज का ससंघ का टोंक में हुआ भव्य मंगल प्रवेश

जगह-जगह आरती, पाद प्रक्षालन एवं जैन नसिया में समाज के द्वारा भव्य आगवानी

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

परम पूज्य आचार्य 108 इन्द्रनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज के ससंघ का 6 जुलाई को प्रातःकाल श्री दिगंबर जैन नसिया टोंक में भव्य मंगल प्रवेश हुआ, जहां पर समाज के द्वारा रजत पात्रों में पाद प्रक्षालन कर भव्य अगवानी करते हुए संत निवास में ठहराया। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता और मीडिया प्रकोष्ठ मंत्री पवन कंटान एवं कमल सर्राफ ने बताया कि बालाचार्य निपूर्ण नंदीजी महाराज का टोंक में चातुर्मास के लिए सोहेला होते हुए घंटाघर पर पहुंचे, जहां पर जुलूस के रूप में मुख्य बाजार, घंटाघर, सुभाष बाजार, पांचबत्ती, बड़ा कुआं को होते हुए नगर भ्रमण करते हुए भगवान महावीर के जयकारों के साथ जैन नसिया पहुंचे। बैंडबाजे की मधुर भजन पर युवा एवं महिलाएं भक्ति नृत्य कर रही थीं, इस मौके पर जगह-जगह श्रद्धालुओं द्वारा पाद प्रक्षालन, आरती एवं स्वागत किया गया। जैन नसिया पहुंचने के बाद यह जुलूस धर्म सभा में परिवर्तन हुआ जहां पर बाहर से पधारे हुए अतिथियों के द्वारा और समाज के अध्यक्ष भागचंद फुलेता, राजेश सर्राफ, धर्म दाखिया, धर्मेंद्र पासरोटियां, कमल आड़रा, सुरेंद्र पाटनी, रमेश छाबड़ा, कमलेश कल्ली वाले बाबूलाल, धोली वाले, प्रकाश जी पटवारी द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलित किया गया तत्पश्चात बाहर से आए अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

इस मौके पर बालाचार्य निपूर्णनंदी जी महाराज ने कहा कि अपने जीवन में परिग्रह का प्रमाण करना चाहिए और छोटे-छोटे नियम लेकर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। यह मनुष्य जीवन बड़ी मुश्किल से मिला है। इसके अंदर जितना हो सके धर्म कार्य करते रहना चाहिए, इस मौके पर अनिल सर्राफ, रिंकू बोरदा, विमल निंबोला, मनीष फागी, अरविंद दतवास, धर्मचंद आड़रा पत्तल दोना, ज्ञान संघी, कुंदन आड़रा, जितेंद्र बनेठा, सुरेंद्र अजमेरा, रमेश काला आदि लोग मौजूद रहे।

श्रमणों के चातुर्मास एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटन करने को लेकर हुआ कार्यशाला का आयोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जोधपुर। अल्पसंख्यक मामलात विभाग जोधपुर द्वारा निदेशालय के निर्देशों की अनुपालना में अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के श्रमणों (साधु-साध्वियों) के पैदल विहार के समय ठहरने तथा चातुर्मास के दौरान प्रवचन एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटन करवाने के लिए जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सतेन्द्र सिंह कर्दम की अध्यक्षता में 04.07.2024 को एक कार्यशाला का अयोजन किया गया, जिसमें अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के विभिन्न संगठनों ने भाग लेकर पृथक-पृथक प्रस्ताव जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी के समक्ष रखे जिस पर जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सतेन्द्र सिंह कर्दम ने जैन समुदाय के सभी प्रतिनिधियों से प्राप्त हुए प्रस्तावों पर चर्चा करके सभी की सहमति से सामूहिक प्रस्ताव तैयार करने के आदेश अपने अधीनस्थ आधिकारियों को प्रदान किए। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी प्रेरणा कछावा ने बताया कि जैन समुदाय के सभी प्रतिनिधियों से प्राप्त हुए प्रस्तावों को तैयार करके जल्द ही जिला कलक्टर एवं निदेशालय अल्पसंख्यक मामलात विभाग भिजवाकर जैन समुदाय के श्रमणों (साधु-साध्वियों) के पैदल विहार के समय ठहरने तथा चातुर्मास के दौरान प्रवचन एवं प्रवास के लिए भूमि आवंटित करवाई जाएगी। इस कार्यशाला में अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जय गुरू ब्रज मधुकर संस्थान सूरसागर, श्री मुहताजी मन्दिर ट्रस्ट नागौरी गेट के सामने, राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद्, ऑल इण्डिया जैन माइनॉरिटी फाउंडेशन, जैन पोरवाल भाईपा समिति, जैन समाज फलौदी, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय श्रावक संस्थान, बेरोजगारों की आवाज के प्रतिनिधि शामिल हुए।

सन्मतिसुनीलम

जिस व्यक्ति का असत्य की ओर झुकाव होता है उसके ऊपर सत्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत शत नमन, वंदन।

-: नमनकर्ता :-

श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
महावीर महिला मण्डल किशनगढ़
श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़

महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता जोधपुर
विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड किशनगढ़
कुशल ठोल्या - जयपुर
श्रीमती ममता सोगानी - जयपुर

आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज का चातुर्मास मदनगंज किशनगढ़ में हो रहा है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

गुरुदेव विराग सागर जी महाराज की समाधि पर विनयांजलि सभा

पावन सान्निध्य मुनिश्री महिमा सागर जी एवं गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

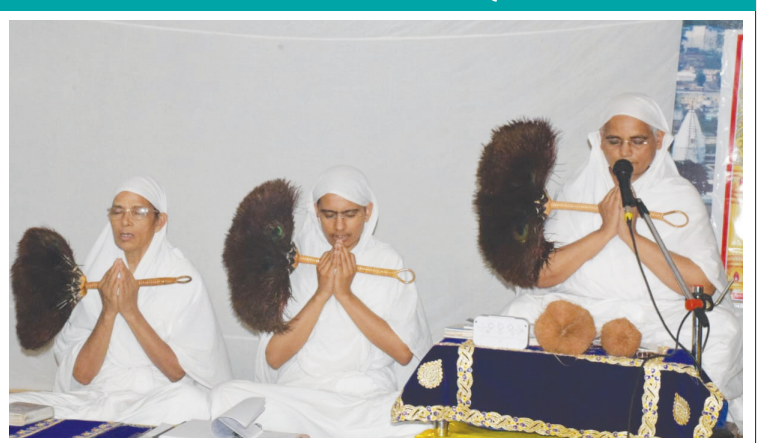

जैन जगत की महान विभूति, सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता, विशाल संघ के अधिनायक, युगप्रतिक्रमण प्रवर्तक, नव आचार्य गणों के गणाचार्य 108 श्री विराग सागर जी महामुनिराज की सल्लेखना पूर्वक सुसमाधि मरण पर उनकी सुविज्ञ शिष्या प. पू. भारत गौरव, गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ एवं मुनिश्री 108 महिमा सागर जी महाराज ससंघ सान्निध्य में श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र संघी जी मंदिर सांगानेर, जयपुर में भारतवर्षीय विनयांजलि सभा (वैराग्य सभा) का आयोजन हुआ। इस अवसर पर सम्पूर्ण जयपुर समाज के श्रावक गण उपस्थित थे।

आचार्य श्री के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत हुई। श्रमण संस्कृति संस्थान की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण की सुंदर प्रस्तुति गुरु गुणगान द्वारा की गई। विनयांजलि के क्रम में पंडित जयकुमार जी शास्त्री सांगानेर, अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा जी के मंत्री एडवोकेट हेमन्त जी सौगानी, प्राचार्य अरुण शास्त्री, मालवीय नगर से. 3, अध्यक्ष सी. एल. जैन साहब, कैलाशचन्द जी जैन, श्रमण संस्कृति संस्थान के मंत्री सुरेश कासलीवाल ने गुरू के गुणगान कर विनयांजलि समर्पित की। प्रबन्धकारिणी कमेटी श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी सांगानेर के द्वारा इस विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष महावीर बज, मंत्री नरेन्द्र पाण्ड्या ने पूज्य आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के चरणों में प्रवचन हेतु निवेदन किया। परम आराध्य गुरूवर की आकस्मिक समाधि की घटना सुनकर मेरी आत्मा काँप गई, शरीर शिथिल सा पड़ गया, सोचने लगी क्या यह सत्य है या कोई स्वप्न देख रही हूँ। सुना था कि 2024 का साल अच्छा नहीं है, लेकिन यह तो सपने में भी नहीं सोचा कि हमारे सर से गुरुदेव का वरदहस्त छिन जायेगा। जिस मजबूत नींव पर लगभग 500 शिष्यों रूपी इमारत खड़ी थी, आज वह इमारत नींव के अभाव में अपने बल पर खड़ा होने का साहस नहीं जुटा पा रही है। विगत फरवरी माह में कृष्ण पक्ष और अष्टमी के दिन ही संत शिरोमाणी विद्यासागर जी महाराज की समाधि हुई और अभी जुलाई माह में कृष्ण पक्ष और चतुर्दशी के दिन गणाचार्य विराग सागर जी महाराज की समाधि हुई। जैन जगत के महान दो आचार्यों का वियोग संपूर्ण जैन समाज के लिए दुःख का कारण है। माताजी ने आचार्य श्री का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि तपस्वी सम्राट सन्मति सागर जी ने बालक अरविंद की परीक्षा ली। भारत का नक्शा बना हुआ कागज फाड़कर उन्हें जोड़ने के लिए कहा। बालक अरविंद ने अपनी बुद्धिमत्ता से पीछे बना हुआ मनुष्य का चित्र जोड़कर आचार्य श्री को दिखाया। बालक की बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर उन्हें कमण्डल पकड़कर चलने को कहा। उस दिन से वह बालक अरविंद ऐसा खिला जो वैराग्य पथ पर विरागसागर नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज उनके द्वारा हजारों-लाखों मनुष्य धर्म में जुड़ रहे है। आज हम उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनायें जैसे उन्होंने अपने शिष्यों को यथायोग्य स्थान देकर जैन धर्म रूपी रथ का संचालन सुव्यवस्थित किया। उसी तरह हम भी धर्म क्षेत्र में राग - द्वेष से दूर रहकर आने वाली पीढ़ी को यथायोग्य निर्देशन देकर धर्म मार्ग में लगायें।

आचार्य विराग सागर जी महाराज को विनयांजलि

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता

नैनवां। गणाचार्य विराग सागर महाराज का संल्लेखनापूर्वक समाधिमरण अचानक स्वास्थ्य खराब होने से हो गया, उन्होंने उसी समय सल्लेखना समाधि ग्रहण की। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता महावीर सरावगी ने जानकारी देते बताया कि आप बुंदेलखंड के प्रथमाचार्य आचार्य मुनिराज थे। आपने 350 मुनियों, आर्यिकाओं माताजी, क्षुल्लक व ऐलकों को संयम धर्म का मार्ग प्रदान कर मुनि दीक्षा दी थी, वही साधु आज गांव-गांव, ढाणी-ढाणी शहरों में धर्म का उपदेश देकर जन-जन का कल्याण कर रहे हैं। दिगंबर जैन खंडेलवाल सरावगी समाज तेरा पंथ जैन मंदिर में रात्रि को 8:00 बजे भक्तामर स्तोत्र का पाठ कर णमोकार महामंत्र का 9 बार पाठ कर महान संत जैनाचार्य विराग सागर महाराज को सभी भक्तों ने भावभीनी विनयांजलि अर्पित की।

सूरजमल जैन, एडवोकेट कैलाश जैन गुढ़ावाला, राजेंद्र जैन ठोलिया, महावीर सरावगी, पारस रजलावता, विशाल देईवाला, राजेश देईवाला, महिलाओं में श्रीमती विमला शाह, बीना रजलावता, सुनीता पटौदी, इंदिरा जैन ठोलिया आदि भक्तों ने ईश्वर से प्रार्थना कर जैन संत को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

श्री कनकनंदी जी गुरुराज का पारडा ईटीवार में वर्षायोग सन 2024 हेतु होगा मंगल विहार

शाह मधोक जैन चितरी

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी ऋषिराज के सबसे ज्येष्ठ व श्रेष्ठ नंदन स्वाध्याय तपस्वी आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुराज का योगेंद्रगिरी अतिशय तीर्थक्षेत्र से दिनांक 11 जुलाई को शाम 4.30 बजे भीमदड़ी के लिए मंगल विहार हुआ।

पूज्य गुरुदेव ने विगत दशकों से जहां जहां भी वर्षायोग या प्रवास रहा वहां वहां उनकी प्रतिज्ञा पूर्वक कलश स्थापना की बोलियां, पद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट, पिच्छी भेंट आदि अन्य किसी भी प्रकार की बोली - नीलामी व सौदेबाजी का निषेध रहा।

पूज्य गुरुदेव के मुख्य सूत्र – 1. ''मै आत्म शिव सोख्य सिद्धि के लिए साधु बना हूँ ,प्रसिद्धि के लिए नहीं'',

''धर्म आत्म दर्शन के लिए है - प्रदर्शन के लिए नहीं'', इस सूत्र को ध्यान में रखकर गुरुदेव समस्त आडम्बर दिखावों से पूर्णतया दूर रहते है, उनके प्रवास वर्षायोग हेतु किसी भी प्रकार की निमंत्रण पत्रिका, होर्डिंग, बोर्डिंग, बड़े-बड़े मंच पंडाल, धूम-धड़ाका, हाथी घोड़ा आदि सभी दिखावा अपव्ययों का निषेध रहता है। 2. ''मांगण मरण समान है मत मांगो कोई भीख, मांगन से मरना भला यह सदगुरु की सीख'' पूज्य गुरुदेव कहते है कि बड़े बड़े चक्रवर्ती, राजा, महाराजा भी आत्मिक शांति के लिए पूरा का पूरा वैभव, लौकिक सुख, संपत्ति छोड़कर तीन लोक में पूज्य मुनि पद धारण कर साधना करते है तो फिर दिगंबर वीतरागी मुनि बनकर एक पैसे की याचना करना, चंदा चिट्ठा करना या अन्य कोई याचना करना तो थूक कर चाटना, स्वयं के द्वारा किए हुए वमन (उल्टी) को पीने के समान है।

3. ''जो साधक निर्माण में लग जाता है वो निर्वाण से दूर हो जाता है'' आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव ने अपने पूरे साधक जीवन में किसी भी भौतिक निर्माण, ईंट पत्थर की न तो कभी प्रेरणा दी, न ही इसका कभी मार्गदर्शन किया।

4. मुझे कभी सिंहासन व पट्ट से नहीं बंधना, जिनको समाधि से पूर्व त्यागना अनिवार्य तो फिर उससे ममत्व ही क्यों? इसलिए पूज्य गुरुदेव सर्वाधिक श्रमणों व सर्वाधिक आचार्यों के शिक्षागुरु, सर्वाधिक भाषाओं के ज्ञाता, सर्वाधिक साहित्यों के रचियता व सर्वाधिक आध्यात्मिक सारभूत काव्य के रचयिता

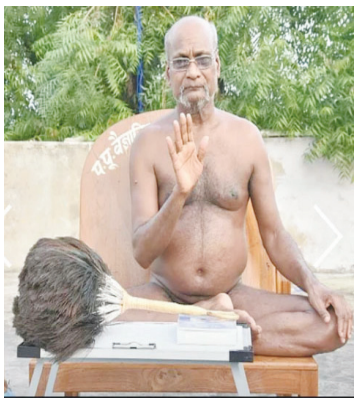

आचार्य साधक होते हुए भी सिंहासन का त्याग कर साधारण पट्ट पर विराजते हैं।

5. आजकल सभी पंचकल्याणक, विधान आडम्बर, धन संग्रह, मंच माला से ही भरे होते हैं, धार्मिक सभाओं का अधिकांश हिस्सा बोलियों व मान सम्मान में व्यय कर दिया जाता है, इन पंचकल्याणकों में आत्मा का शून्य और पंचों का भरपूर कल्याण होता है, इसलिए पूज्य गुरुदेव जिन्होंने सभी शिष्यों को पंचकल्याणक व विधान की क्रियाएं तक सिखाईं उन्होंने पंचकल्याणक में सानिध्यता देना छोड़ दिया।

6. पूज्य आचार्य भगवंत ने अनेक त्याग संकल्प से अपने स्व संघ को सादगी से परिपूर्ण इतना सरल व सहज कर दिया है कि विगत दशकों से इनका चातुर्मास व प्रवास प्रायः छोटे छोटे एकांत गावों में होता है, मात्र एक एक परिवार के पुण्य पुरुषार्थ से पूरा चातुर्मास सानन्द संपन्न हो रहे हैं, इस वर्ष का वर्षायोग भी पंडित कीर्ति - पंडित पंकज बंधु मात्र एक परिवार के पुण्य पुरुषार्थ द्वारा हो रहा है।

7. धर्म में व्याप्त इन बुराइयों की वजह से इनकी व्याख्या करते करते पूज्य आचार्य श्री अत्यंत द्रवित हो रो तक देते हैं।

8. पूज्य गुरुदेव अपनी 50 वर्षों के संन्यास जीवन में होने वाले अनेकानेक अनुभवों से सतत सीखते हैं। वे इतने महाज्ञानी संत होते हुए भी स्वयं को विद्यार्थी कहते हैं, गुरुदेव के पास कभी भी लौकिक चर्चा नहीं होती। वे पांच प्रकार के स्वाध्याय को छोड़कर मौन रहते हैं, विहार हो या आहार जब भी गुरुदेव के समीप जाओ तो उनके द्वारा होने वाले स्वाध्याय का सारांश ही बोलने की अनुमति होती है। अन्य कोई चर्चा नहीं।

9. पूज्य गुरुदेव इतने सरल, सहज व समता धारी हैं कि बाल हो या किशोर, वृद्ध हो या युवा, राजा हो या रंक सब उनसे एक समान लाभ को प्राप्त करते हैं।

10. पूज्य आचार्य श्री सेवाभावी, गुणी, उदार, जिज्ञासु लोगों को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।

11. अनेकानेक विलक्षण क्षमता व निस्पृहता में पूज्य आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुराज वर्तमान युग में एक आश्चर्य हैं।

12. पूज्य आचार्य श्री अपने दीक्षा, शिक्षा व प्रेरणा देने वाले गुरुओं का बार-बार गुणानुवाद करते हैं जिनमें आचार्य श्री देशभूषण जी, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी, दीक्षा गुरु आचार्य श्री कुंथुसागर जी, आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी, आचार्य श्री भरतसागर जी, प्रथम गणिनी आर्यिका श्री विजयमति माताजी व गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी आदि। इस 21वीं सदी में भी ऐसे सत्यनिष्ठ, समताधारी निस्पृही आचार्य श्री कनकनंदी गुरुराज श्री संघ की सेवा वैयावृत्ति करने वाला श्रावक अपने जीवन में छाए हुए दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में तब्दील कर लेता है। पूज्य आचार्य श्री के चरणों में अविनाशी नमन।।

जीवन की उपयोगिता का परिचायक जीवन की लंबाई नहीं गहराई होती है

- मुनिश्री प्रतीक सागर महाराज

दिल्ली। आपके व्यक्तित्व का परिचय संपत्ति से नहीं आपके द्वारा अर्जित सम्मान के आधार पर होता है। जीवन की उपयोगिता लंबाई से नहीं, गहराई से पहचानी जाती है। क्रांतिकारी मुनि श्री प्रतीक सागर महाराज ने जीवन की उपयोगिता को समझाते हुए बताया कि संतान को संपत्तिवान बना पायें या न बना पायें मगर संस्कारवान अवश्य बनाएं।

दिल्ली महरौली की अहिंसा स्थली में अपने प्रवचन में बताया कि ढाई हजार वर्ष से भी अधिक काल बीत गया, भगवान महावीर मोक्ष गये, उन्होंने विवाह नहीं किया, संतानोत्पत्ति नहीं की मगर उनका वंश आज भी उनकी विरासत को आगे बढ़ा रहा है। उनके गुणों का प्रकाश आज भी सभी को प्रकाशित कर रहा है। आप विवाह कर संतान उत्पत्ति करते हो, मगर आपका वंश आपकी परंपरा के अंश को आगे बढ़ाये ये निश्चित नहीं है। मुनिश्री प्रतीक सागर ने बताया कि ये महत्वपूर्ण नहीं है कि आपने कितना खाया वरन यह महत्वपूर्ण है कि आपने कितना पचाया। जीवन लंबाई से नहीं गहराई से पहचाना जाता है। भगवान महावीर ने तीस वर्ष की आयु में मुनिव्रत धारण कर बारह वर्ष तक तप किया, 42 वर्ष की आयु में केवलज्ञानी प्राप्त कर तीस वर्ष तक जगत कल्याण कर मात्र 72 वर्ष की आयु में निर्वाण पा लिया। जीवन तो मात्र 72 वर्ष का ही था मगर उपलब्धि अमर हो गई। मुनिश्री ने बताया कि महापुरुष जीवन की लंबाई से नहीं काम की गहराई से अमर हो जाते हैं।

आपने दिल्ली की युवा पीढ़ी को जैन मुनियों के विहार में साथ चलने की प्रेरणा देते हुए कहा कि ये संस्कार देना माता पिता का कर्तव्य है, आप लौकिक शिक्षा के लिये बच्चों पर दबाव बनाते हो और बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर विदेशों में बस जाते हैं। आप वृद्धावस्था में आकर कहते हो महाराज हमारे बच्चे हमें छोड़कर चले गए, हमारी सुनते ही नहीं, मैं पूंछता हूं इन माता-पिता से जब हम समझाते थे तब तुम नहीं सुनते थे कि बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार दो तब आप नहीं सुनते थे, अब वे आपकी नहीं सुनते।

– वेदचन्द जैन, गौरेला

अभूतपूर्व तीन संघों का महामिलन कोलकाता के बाली नगर (हावड़ा) में

महावीर जैन तेघड़िया, कोलकाता

09.07.24 दिन मंगलवार का शुभ दिन बाली-उत्तरपाड़ा जैन समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और यादगार रहा, जब एक साथ दिगंबर जैन समाज के तीन संघों का महामिलन बाली की पुण्य धर्मधरा पर एक साथ हुआ। नजारा कुछ अलग ही था ऐसा लग रहा था मानो कि पंचमकाल में भी तीर्थंकर भगवान का समोशरण धरती पर आ गया हैं। समाधिस्थ 108 गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के परम प्रभावी शिष्य गुरुदेव आचार्य 108 श्री विनिश्चय सागर जी मुनिराज ससंघ, परम पूज्य गुरुदेव 108 उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी मुनिराज ससंघ एवं गणिनी आर्यिका 105 विशा श्री माता जी ससंघ के महामिलन ने बाली नगर में अदभुत छटा बिखेर दी। आदरणीय महावीर जी जैन ने जैन गजट को बताया कि सभी भक्तों ने आचार्य श्री के मंगल सानिध्य में श्री

पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर (जटिया रोड) पहुंचकर श्री जी का मंगल अभिषेक, शांतिधारा के साथ आचार्य श्री ने आशीर्वचन दिए। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय जैन समाज, मुनि संघ समिति एवं कोलकाता जैन समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

बीबीओटीसी के जैन प्रतिनिधि राष्ट्रपति मुर्मू से मिले

जैन धर्म के धरोहर स्थलों के संरक्षण का आग्रह

कोलकाता जैन समाज ने विनीत जैन झांझरी जी को जैन धर्म क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिऐ दी हार्दिक बधाई एवं शुभकामना

महावीर जैन तेघड़िया

कोलकाता। बीबीओटीसी के सचिव विनीत झांझरी जैन को सोमवार दिनांक 08.07.24 को उदयगिरि-खंडगिरि सिद्धक्षेत्र की यात्रा के दौरान भारत की माननीय राष्ट्रपति मैडम द्रौपदी मुर्मू से मिलने का अवसर मिला। जैन धर्म के इतिहास एवं क्षेत्र के अन्य मुद्दों के संबंध में संक्षिप्त चर्चा हुई तथा समिति के अन्य सदस्यों के समक्ष इस विषय पर पुनः बैठक कर चर्चा करने का आश्वासन दिया गया। आदरणीय महावीर जी जैन ने जैन गजट को बताया कि श्री विनीत जी जैन झांझरी जी सुमितनाथ ट्रस्ट तेघरिया कोलकाता के भी सचिव हैं। श्री विनीत जी जैन झांझरी जी ने महामहिम श्रीमती द्रोपदी जी मुर्मू से मिलकर जैन धर्म के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य किया है जिसके लिए कोलकाता एवं बृहतर कोलकाता जैन समाज उनको बहुत-बहुत बधाई एवं साधुवाद देती है।

गणाचार्य विरागसागर जी को दी गयी विनयांजलि

सुनील जैन, ललितपुर

ललितपुर। दिगम्बर जैन परंपरा के प्रमुख संत, राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागरजी महामुनिराज की समाधि होने पर प्रभावना जनकल्याण परिषद (रजि.) द्वारा विनयांजलि सभा में उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की गई।

वक्ताओं ने कहा कि अचानक आचार्यश्री के जाने से जैन श्रमण संस्कृति के लिए बहुत बड़ा आघात पहुँचा है। उनकी उत्कृष्ट समाधि सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

परिषद के अध्यक्ष राजेश रागी ने बताया कि आचार्यश्री के 500 से अधिक शिष्य- प्रशिष्य हैं। वे विशाल संघ के नायक थे। उन्होंने अनेक कृतियों का प्रणयन किया।

सह निर्देशक सुनील शास्त्री सोजना ने कहा कि आचार्यश्री को शायद आभास हो गया था इसलिए उन्होंने एक दिन पूर्व ही अपने अंतिम संबोधन में जहाँ पट्टाचार्य का पद आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज को देने की घोषणा की वहीं सभी से क्षमा भी मांगी।

डॉ. सुनील संचय ने बताया कि अभी फरवरी में ही संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि से हम उबर नहीं पाए थे कि अब एक और सूर्य अस्त हो गया है। राजेन्द्र महावीर ने कहा कि उनकी साधना अद्भुत थी, उन्होंने अनेक उपसर्गों को जीतकर कठोर साधना और संयम का परिचय दिया।

कोषाध्यक्ष मनीष विद्यार्थी ने कहा कि आपसे जिनशासन की महती प्रभावना हो रही थी। आपने अट्ठारह नयी लिपियों का विकास किया था। साहित्य सृजन तो अद्भुत था ही। व्यसन मुक्त और शाकाहार अभियान के माध्यम से लाखों लोगों का जीवन परिवर्तन कर उन्हें नई दिशा दिखाई।

सम्पादकीय

जन्म नाम अरविंद यानी कमल, जन्म से ही संसार रुपी समुद्र में कमल सम जीवन जीने वाले व्यक्तित्व ने अपनी 41 वर्षीय दिगम्बरत्व की अनुपम यात्रा का शिखर आरोहण अभूतपूर्व, अनुपम अविस्मरणीय समाधि से कर दिगम्बर जैन जगत के सामने अपनी सरलता, सहजता, संस्कार, समर्पण, शुचिता के साथ सम्यक्त्व का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो युगों-युगों तक जयवंत होकर दिगम्बरत्व की ध्वज पताका को कायम रखेगा।

कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो

ऐसा ही सांसारिक लोगों के बीच चमत्कार दिखाया है गणाचार्य विरागसागरजी महाराज ने। उन्होंने जो समाधि पूर्व अपना विडियो रिकार्ड कराया वह उनके अध्ययन की स्पष्टता, आगम के प्रति उनके बहुमान को प्रदर्शित करता है। वैसे तो जैन जगत में दीक्षा ली ही इसलिए जाती है कि समाधि संलेखना को धारण कर आत्म पथिक बने।

350 दीक्षाओं के प्रदाता होने का सौभाग्य हासिल करने वाले गणाचार्य विरागसागरजी महाराज ने अपने आपको उस दौर में स्थापित किया जिस दौर में उनका विरोध भी हुआ। अपने विरोधियों को बौना साबित करते हुए गणाचार्य श्री विरागसागरजी ने अपने संघ को ऐसा मजबूत बनाया जहां से दिगम्बरत्व का सच्चा दिग्दर्शन करने में उनके शिष्य प्रशिष्यों ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

दिन-रात आत्मा का चिंतन मृदु संभाषण में वहीं कथन निर्वस्त्र दिगम्बर काया में भी, प्रकट हो रहा अन्तर्मन

की पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए वे एक ऐसे आचार्य बने जिन्होंने देश के ललाट पर एक ऐसी चमक बिखेरी जिससे जैन धर्म में उत्तर-दक्षिण की दूरियां मिटीं साथ ही पंथवाद की बेड़ियों में जकड़ा समाज भी अपने आपमें महसूस करने लगा कि दिगम्बरत्व एक ऐसा वेश है जिसे पालन करने वाला जीवन जीने की कला के साथ मृत्यु को प्राप्त करने की कला भी सीखता है।

गणाचार्य विरागसागरजी की अभूतपूर्व समाधि अवसर पर विशेष

संसार में कमलवत, वैराग्य से 'विराग' तक

दिगम्बरत्व की अनुपम यात्रा के समाधि शिखर संत आचार्य विरागसागरजी

संल्लेखना की पवित्रता के पोषक बने गणाचार्य विरागसागरजी

जब व्यक्ति जन्म लेता है उसी दिन से मृत्यु की यात्रा प्रारंभ हो जाती है। जीवन और मृत्यु के दो पृष्ठ के बीच जीवन की पुस्तक में मनुष्य का वह सब कुछ अंकित होता है जो उसे अजर-अमर बनाता है। गणाचार्य विरागसागरजी महाराज ने अपना संयमी जीवन 16 वर्ष की आयु में प्रारंभ कर दिया था। जिस आयु में हम अपना जीवन खेलकूद में व्यतीत करते हैं। उसमें आपने अपने हाथों से पिच्छी धारण कर तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागरजी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ले ली थी।

लौकिक शिक्षा पाँचवीं तक, अलौकिक पंच महाव्रत में अंतिम समय तक दृढ़ रहे गणाचार्य

यदि हम लौकिक शिक्षा की बात करें तो वे केवल पांचवीं तक ही पढ़े, शांति निकेतन कटनी में आपने मध्यमा (इन्टर) तक शिक्षा लेकर अपने आपको अलौकिक बनाने का उपक्रम कर लिया। वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के विश्वास पर खरे उतरे क्षुल्लक पूर्ण सागर को पूर्ण दिगम्बर बनाने वाले आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज ने अपने वात्सल्य से पांचवीं पास एक युवा को जीवन की कठिनतम शिक्षा की दीक्षा प्रदान करते हुए पूर्ण दिगम्बरत्व प्रदान किया। महाराष्ट्र का औरंगाबाद धन्य हुआ और नामकरण हो गया मुनिश्री विरागसागरजी महाराज। गुरुमुख से निकले 'विराग' नाम को सार्थक करने निकले मुनि विरागसागरजी महाराज ने अपने तप-त्याग-अध्ययन-मनन-चिंतन-स्वाध्याय के साथ अपनी चर्या का साम्य स्थापित करते हुए अनेक आयाम स्थापित किये । अपने आपको स्थापित करते

हुए आपने अपने आपको इतना सक्षम बनाया कि 8 नवम्बर 1992 को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में गुरु आज्ञा से आपको जैन दर्शन के 36 मूलगुण धारी आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। आचार्य पद प्रतिष्ठापन अवसर पर अपनी निस्पृहता प्रदर्शित करते हुए आपने कहा 'गुरु बना नहीं जाता, बना दिया जाता है और शिष्य बनाये नहीं जाते, बन जाते हैं।'

गुरु के विश्वास पर खरे उतरे शिष्यों की लग गई कतारें

आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज ने पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद एवं समर्थ व सक्षम आचार्य के रूप में अपने आपको स्थापित किया। उनके वाक्य शिष्य बनाये नहीं जाते बन जाते हैं, का ऐसा असर हुआ कि शिष्यों की कतारें लग गईं। आपने आचार्य, उपाध्याय, मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक के रूप में 350 दीक्षाएं प्रदान कीं। आपने अपने शिष्यों में से आचार्य बनाये और उन्हें स्वतंत्रता देकर दिगम्बर धर्म को प्रभावी बनाने का आदेश दिया। देखते-देखते उनके शिष्यों ने सैकड़ों प्रशिष्य तैयार कर दिए जो आज संपूर्ण देश में अपना डंका बजा रहे हैं। उन्हीं में से एक श्रमणाचार्य 108 विशुद्धसागरजी महाराज को अपनी समाधि कुछ घण्टे पहले अपना उत्तराधिकारी घोषित करने वाले आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज ने जो अपना चेतनामयी वीडियो बनवाया व उसमें जिस निस्पृहता से अपना निर्भीक, निराकुल कथन किया वह युगों-युगों तक गणाचार्य विरागसागरजी महाराज के अमरत्व प्रदान कर गया।

2 जुलाई 2024 को गंभीर हार्टअटैक, समाज एवं चिकित्सकों को दृढता पूर्वक इलाज से इन्कार, पंच महाव्रतों के प्रति अभूतपूर्व दृढ़ता और 3 जुलाई 2024 को स्व संवेदन के साथ आहार चर्या करना फिर स्व-प्रेरणा से अपना विवेकपूर्ण वीडियो संदेश देना, उसमें भी सबसे क्षमा सबको क्षमा और यह कहना कि आज बोल रहे हैं कल न बोल पाएं, आज ध्यान है कल ध्यान न रहे। मैंने पूरा वीडियो कई बार सुना उनका हर शब्द न केवल स्पष्ट है बल्कि संसार के प्रति वैराग्य भाव के चरमोत्कर्ष को दर्शाता है। किसी साधक की साधना का नवनीत समाधि के प्रति ललक को प्रदर्शित करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि जैन दर्शन में सारे पद भार रूप हैं जिन्हें छोड़ना होता है पद मोक्षमार्ग में बाधक है। इस भावना के साथ उन्होंने अपने पद को छोड़ा और 4 जुलाई 2024 की प्रातःकालीन ब्रह्ममेला के पूर्व 2.27 बजे इस नश्वर देह का त्याग पूर्ण विवेक व प्रतिक्रमण सामायिक के उपरांत किया जो उन्हें एक ऐसा तपस्वी निरुपित करता है जो जैन दर्शन में समाधि की नजीर के रुप में स्थापित करेगा।

वर्तमान काल में युग प्रतिक्रमण के जनक थे गणाचार्य

हम सबने प्रतिक्रमण खूब सुना लेकिन युग प्रतिक्रमण की चर्चा गणाचार्य विरागसागरजी के मुख से सुनी व देखी। अपने संघ के प्रत्येक साधु के इस निमित्त बुलाकर जैनत्व में प्रभावना का संदेश देकर उन्होंने युग प्रतिक्रमण को जीवंत किया।

विद्वानों के प्रति अपूर्व स्नेह रखने वाले गणाचार्यजी ने अनेक सम्मेलन कराये, प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का कार्य किया, साहित्य सृजन किया, जीवंत कृतियां तैयार कीं। उनकी सरलता की सुगंध इतनी फैली थी कि उनसे दीक्षा लेने की लंबी कतार थी। उनकी पारखी नजर ने हमें ऐसे अनेक हीरे दिये जो दिगम्बरत्व के क्षितिज पर अपनी उत्कृष्टता को प्रदर्शित कर रहे हैं। आचार्य विशुद्धसागरजी, आचार्य विमर्शसागरजी, आचार्य विनम्रसागरजी, आचार्य विनिश्चय सागरजी, आचार्य विभवसागरजी सहित अनेक शिष्य-प्रशिष्य साहित्य सरोवर के राजहंस बनकर जिनागम की सेवा कर रहे हैं।

'वि' से प्रारंभ शिष्य परम्परा जैन दर्शन की विराग परम्परा

आचार्य विमलसागरजी महाराज से विरागसागर नाम पाकर अपने शिष्यों के नाम में उन्होंने 'वि' अवश्य जोड़ा जो उनकी एक विशिष्ट पहचान बनी। संपूर्ण देश में 'वि' से प्रारंभ होने वाले अधिकांश नामों को यह माना जा सकता है कि वे गणाचार्य विरागसागरजी महाराज के शिष्य हैं।

मुझे उनका चरण सान्निध्य जुलाई 2013 पावागिरि ऊन से सिद्धवरकूट - इन्दौर यात्रा के दौरान मिला। सिद्धवरकूट कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्री प्रदीप कुमार सिंह जी कासलीवाल इन्दौर ने मुझे (राजेन्द्र जैन महावीर) व श्री आशीष चौधरी, मुकेश जैन पेप्सी सनावद को यात्रा की जिम्मेदारी सौंपी, उस दौरान लगभग 1 माह तक हम आचार्यश्री के चरण सान्निध्य में रहे। 09 जुलाई 2013 को आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज की जन्मभूमि सनावद में उनका अभूतपूर्व प्रवेश हुआ, उनकी सरलता, सहजता देखकर मन प्रसन्नता से भर जाता रहा। ऐसे महान तपस्वी संत जिन्होंने अपने शरीर की आयु के 61 वर्ष में से 41 वर्ष दिगम्बरत्व की सेवा में लगाए व दिगम्बरत्व के नवनीत संलेखना समाधि को श्रेष्ठतम ऊंचाईयाँ प्रदान कीं ऐसे महान गुरुवर के चरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सह सम्पादक

दान पहले घर से शुरू करें
(Charity begins from home)

- चीरंजी लाल बगड़ा, कोलकाता

मन्दिर में दान देने से पहले देखें कि अपने बंधु, स्वधर्मी बन्धु अथवा अपने किसी पड़ोसी को तो इसकी जरूरत नहीं है ?

अभी हाल ही में हमने सोशल मीडिया में एक आचार्यश्री का जैन दर्शन, समाज और संघ के हित में अत्यंत ही प्रेरणादायक वीडियो सन्देश देखा। आचार्यश्री ने अपने उस वीडियो सन्देश में कहा कि यदि आपके पास दान करने के लिए अतिरिक्त धनराशि हो तो, उसे सबसे पहले अपने जरुरतमंद भाई अथवा स्वधर्मी बन्धु की सहायता के लिए देने का प्रयास करें। इस सन्दर्भ में उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि एक श्रावक ने उनसे निवेदन किया कि वह ग्यारह लाख रुपये मन्दिर में दान करना चाहता है, तो आचार्यश्री ने उन्हें सुझाव दिया कि मन्दिर से ज्यादा आवश्यकता अपने किसी भाई अथवा स्वधर्मी बन्धु को तो नहीं है ? इसलिए सर्वप्रथम वह अपने बगल में झाँककर देखे कि उसके परिचित को पैसे की जरूरत तो नहीं है ? तब उस व्यक्ति को ख्याल आया कि उसका सगा भाई ही निर्धन अवस्था में है और अपना जीवन यापन बड़ी मुश्किल से कर रहा है। उस व्यक्ति ने अपने भाई को पर्याप्त धनराशि देकर उसके व्यवसायिक प्रतिष्ठान को सुचारू रूप से स्थापित करने के लिए मदद की। कुछ सालों पश्चात वह भाई स्वयं आर्थिक रूप से इतना सक्षम हो गया कि वो भी अन्य स्वधर्मी बन्धुओं की सहायता करने लगा।

पूज्य आचार्यश्री का यह कथन बेहद सामयिक एवं व्यवहारिक है और सबको उनके विचारों का पूर्ण समर्थन करना चाहिए। जैन दर्शन का अनुपालन करने वाले सभी संघ नायकों और साधु सन्तों से विनती है कि वे इस वर्ष के चातुर्मास का प्रमुख विषय (Theme) ''स्वधर्मी सहयोग'' रखें एवं स्वधर्मी बन्धुओं की आर्थिक सहायता व उत्थान के लिए जैन समाज के लोगों को तार्किक और सकारात्मक तरीके से प्रेरित करें। दान की आवश्यकता भगवान से अधिक समाज को है। समाज अगर सशक्त और संघठित है, तो मंदिर और बना लेंगे परंतु अगर समाज कमजोर और विभक्त है, तो जो मंदिर बने हुए है वे भी दूसरे समाज वाले हड़प लेंगे, जैसे आज प्राचीन तीर्थों के साथ हो रहा है, गिरनार के साथ हुआ है। इसके अतिरिक्त जैन समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समाज द्वारा स्थापित शिक्षालयों और स्वास्थ्य सेवाओं में स्वधर्मी बन्धुओं को निशुल्क या न्यूनतम दरों पर सेवा मिले। वर्तमान में देखा जाता है कि समाज द्वारा स्थापित और संचालित अधिकांश सामाजिक, शिक्षण और स्वास्थ्य संस्थानों में स्वधर्मी बन्धुओं को प्रदान की जाने वाली सहायता अत्यंत ही अल्प और अपर्याप्त है।

सभी पूज्य संतों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि वे आचार्यश्री के स्वधर्मी बन्धुओं की सहायता के सन्देश की अनुमोदना करें और समाज को इस कार्य को करने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरित करने का प्रयास करें।

अभी हम अपनी धर्मपत्नी आशा जी के आग्रह पर एक मंदिर जी के त्रय दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा समारोह में गए, वहाँ हमने करीब नब्बे मिनट सहभागिता की, परंतु भाव विशुद्धि होने की जगह दिमाग में अनर्गल विचार आने लगे, क्योंकि पच्चास मिनट तो बढ़-चढ़कर बोलियों में ही समय लग रहा था, सब अर्थ-संग्रह में व्यस्त थे, धार्मिक क्रिया नदारद। आयोजन के समय के अलावा क्या बोली पूर्व में नहीं की जा सकती ताकि धार्मिक आयोजन की सातत्यता बनी रह सके ? आज से करीब तीस वर्ष पूर्व ही हमने अर्थक्षेत्र से सन्यास लेकर समाज सेवा को अपना पूर्णकालिक कार्यक्षेत्र चुन लिया था, उस वक्त लखपति होना भी सम्मानजनक माना जाता था, एक लाख रुपये की राशि भी उस वक्त बड़ी राशि मानी जाती थी, हम ठहरे साधारण जीवन जीने वाले संतोषी प्राणी, सोचा था बचे रुपये के ब्याज से ही आराम से अपनी बाकी बची जिंदगी गुजार लेंगे। भगवान महावीर के 'जीओ और जीने दो' के सूत्र को अपना चारित्र बनाया, करोड़ों पशुओं को अभय और लाखों लोगों को शाकाहार की प्रेरणा दी और जैन दर्शन के प्रचार प्रसार के कार्य को प्रमुखता दी और आज भी सतत उसी में लगे हुए हैं।

ब्याज दर घटती गयी और महंगाई बढ़ती गयी, इस बीच कर्म की मार ऐसी पड़ी कि पुत्र और पुत्री के विवाह की जिम्मेदारी पूरी कर देने के बावजूद, आज भी उम्र के इस पड़ाव पर आकर भी, उन सबके भरण पोषण की जिम्मेदारी पुनः उपस्थित हुई है। अंतर्यात्रा के इस पड़ाव पर भी हम गृहस्थी की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो पाए हैं। हमने अपने शताधिक प्राप्त पुरुस्कार राशि को भी अपने सामाजिक कार्य क्षेत्र में ही निवेश कर दिया। दिशाबोध विचार मासिक आज भी मुख्यतः हम बिना शुल्क, बिना विज्ञापन अपने संसाधन से निरंतर निकाल ही रहे हैं। हमने शिक्षा काल में पढ़ा था कि अगर धन गया तो कुछ नहीं गया, अगर स्वास्थ गया, तो समझो कुछ गया परंतु अगर चारित्र चला गया तो समझ लो सब कुछ चला गया, परंतु हमारे जैन समाज का तो सूत्र है कि अगर गृहस्थ के पास पैसा नहीं है तो वह दो कौड़ी का है और रही चारित्र की बात तो उसका हमारे समाज में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। कोलकाता का कुख्यात सुपर फोर्टीन सेक्स कांड को याद कर लीजिये, सभी व्यक्ति आज अपने पैसे के बल पर समाज के सम्माननीय सदस्य हैं। जब तक धर्म में अर्थ की प्रधानता रहेगी, यह स्थिति बदलने वाली नहीं है। दान में अर्थ की प्रतिस्पर्धा की जगह

शेष पृष्ठ 7 पर.....

एक चर्चा : मेरी बिटिया - आचार्यश्री प्रसन्न सागर

- किशोर कुमार जैन, गुवाहाटी

मेरे एक मित्र ने मुझे किसी प्रशंगवस ''मेरी बिटिया'' नामक पुस्तक भेंट स्वरुप दी। पुस्तक के कृतिकार के रुप में अंतर्मना प्रसन्न सागर का नाम देखकर पुस्तक ग्रहण करने से अपने आपको रोक नहीं पाया। अंतर्मना ने अनेकों ग्रंथ की रचना की, जो कि लीक से हटकर है। धार्मिक पूजन व जिन शास्त्रों से संबधित ग्रंथ उनकी स्वाध्याय के फलस्वरुप उनके चिंतन व मनन की अभिव्यक्ति हो सकती है, लेकिन ''मेरी बिटिया'' लिखने का विचार मन में आना एक व्यतिक्रम है क्योंकि यह एक घरेलू व सामाजिक विषयों से संदर्भित है या यूं कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि साधना और तपस्या में लीन रहने वाले साधु महात्माओं को भला घर गृहस्थी की बातों से क्या लेना देना? फिर मुझे ऐसा लगा कि ''मेरी बिटिया'' नामक पुस्तक तो कहीं से भी मुनि धर्म से संदर्भित नहीं हो सकती। आचार्यश्री सांसारिकता के मोह माया को त्यागकर महिलाओं को आर्यिका, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारिणी बनकर मोक्षमार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करते है फिर ''मेरी बिटिया'' क्यों ? पुस्तक पढ़ने के बाद मेरी धारणा बदल गई। आज की सोशल मिडिया, प्रिंट मिडिया, इलेक्ट्रोनिक माध्यम में महिलाओं के शोषण, हत्या-बलात्कार के समाचारों की सुर्खियां बनी रहती है। महिलाओं के रहन-सहन, आचार-व्यवहार, उन्मुक्तता, स्वतंत्रता, स्वच्छंदता का सवाल उठाया जाता है। ऐसे में बेटी को क्या करना चाहिए ?, माँ का क्या कर्तव्य होना चाहिए, परिवार समाज में बेटी को किस तरह रहना चाहिए, स्कूल-कालेज में उनको किस तरह की संगत रखनी चाहिए, काम-काजी महिला के रुप में उनका व्यवहार किस तरह का होना चाहिए आदि आदि हर बातों पर इस पुस्तक में चर्चा की गई है। नारी के अनेकों रुप होते है मसलन माँ से लेकर अनेकों रिश्तों से जुड़ी रहती है लेकिन आज के जमाने में वो सारे रिश्ते बेमानी हो गए हैं यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। अतः माँ बेटी का रिश्ता बहुत नाजुक होता है, इसके साथ ही वो रिश्ता भी कायम होता है जब बेटी वैवाहिक रिश्तों से बंधकर एक अन्य परिवार को अपना बनाती है। लेखक ने पुस्तक की भूमिका में ''माँ जैसी कोई नहीं बात'' में सीधे व साफ तौर से कई सारगर्भित तथ्यों की तरफ इशारा किया है, जहाँ एक ओर पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के कारण अब तक लड़कियों की तरफ न तो ध्यान दिया जाता है और न ही इस विषय में कुछ अधिक सोचा गया। उसे खूंटे से बंधी गाय से अधिक सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा नहीं दी गई। वहीं दूसरी ओर आज संपूर्ण परिवार और सामाजिक व्यवस्था का केन्द्र महिला बन गई है। यहां तक उसे राजनैतिक अधिकारों से भी संपन्न किया जाने लगा है। अर्थ-तंत्र में भी उसकी भागीदारी सुनिश्चित हो गई है। यह अनुभव किया जाने लगा है कि लड़कियों की सामाजिक व्यवस्था का पुनर्मूल्यांकन हो ताकि समाज में उसे सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो सके। नई प्रगतिशील सामाजिक सोच में जहाँ एक ओर लड़के-लड़कियों में भेदभाव की दीवारें टूट रही हैं वहीं लड़कियों को प्रगति और उन्नति के भी नित्य नए मापदण्ड स्थापित हो रहे हैं और अब समाज में उनकी पहचान बनने लगी है। इन सबके विपरीत अभी भी समाज में आधुनिकता के नाम पर कई तरह की विसंगतियां भी दिखाई देने लगी हैं। ''सावधान इंडिया'' व ''क्राईम पेट्रोल'' नामक धारावाहिकों में महिलाओं के साथ तथा महिलाओं के द्वारा ही महिलाओं के उत्पीड़न की अनेकों तरह के अपराधों का सिलसिला सच्ची घटना के रुप में दिखाया जाता है। इन सबमें सुशिक्षित महिला को भी फंसते दिखाया जाता है। वहीं कई दूसरे धारावाहिकों में नारी स्वाधीनता के नाम पर समाज के अनचाहे पहलुओं को दिखाकर गलत दिशा की ओर ले जाते हुए दिखाया जा रहा है। आखिर इन सबका अंत कैसे हो ?

आधुनिकता के नाम पर इस तरह का व्यभिचार बंद किस तरह हो सकता है या फिर क्या महिलाओं के स्वतंत्रता के अधिकार को पुनर्विवेचन किया जाना चाहिए। विज्ञापनों में भी नारी को पण्य सामग्री के रुप में दिखाया जाने लगा है। सामाजिक संचार माध्यम मोबाइल व इंटरनेट ने कई नए उच्च स्तरीय आयाम भी दिए हैं तो कई विकृत मानसिक विचारों को भी उत्पन्न किया है। ऐसे में आचार्य अंतर्मना प्रसन्नसागर जी की पुस्तक ''मेरी बिटिया'' माँ-बेटी के अंतरग संबंधों के साथ-साथ अनेकों विचारों को अभिव्यक्ति दी है। पुस्तक हर नारी, महिला चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित हो को पढ़नी चाहिए, संग्रह करनी चाहिए अपने साथ की महिलाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

पुस्तक में डा. आशीष जैन आचार्य ने अपने संपादकीय ''हर माँ और बेटी की कहानी में'' माँ-बेटी के गूढ़ संबंधों को उजागर करते हुए बहुत ही महत्वपूर्ण टिप्पणी लिखी है। माँ-बेटी का संबंध अत्यंत ही आत्मीयता प्रकट करने वाला है। एक ओर जहाँ वात्सल्य, प्रेम और मातृत्व गुणों से भरी हुई माँ है वहीं दूसरी ओर समर्पण, त्याग और संस्कार की मूर्ति बेटी है। माँ के अनुभवों और उसके अनुशासन से बेटी को नई दिशा मिलती है। माँ एक ओर मातृत्व देती है, वहीं दूसरी ओर एक दोस्त बनकर बेटी को हर बात समझाती है। देर से आने पर उसको डाँटना और समझाना, घर के कामों मे आगे होने पर शाबासी देना माँ का एक महत्वपूर्ण गुण है। माँ के लिए बेटी के सपनों का बहुत महत्व होता है। वह चाहती है कि उसकी बेटी संस्कार, शिक्षा और सफलता में बहुत आगे निकले। सही मायनों में देखा जाए तो अंतर्मना ने नारी के अनेकों रुपों को तरजीह न देते हुए सिर्फ माँ-बेटी के प्रगाढ़ संबंधों के ऊपर काफी कुछ जानकारी देने का प्रयास किया है। पुस्तक को पढ़ने के बाद यह बात निश्चित तौर पर कही जा सकती है कि प्रस्तुत ग्रंथ लिखते समय उनकी धर्म सभा में आने वाले परिजनों के अनुभवों को समझने के बाद इसे मूर्त रुप दिया होगा। वर्ना एक कठोर तपस्वी साधु जो कि घर गृहस्थी की बातों से दूर रहता है उन्हें इन सब बातों से क्या मतलब। लेकिन अपने प्रवचनों के माध्यम से अपनी बात रखते हुए समाज में घट रही विकृतियों को मद्देनजर रखते हुए अपने मन के भावों को प्रकट कर सुसंस्कारित करने के मनोभावों को अग्राधिकार दिया होगा।

श्रेष्ठ भारतीय साहित्य की प्रकाशन संस्था भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा ''मेरी बिटिया'' का 2019 में प्रकाशन हुआ। 133 पृष्ठों में प्रकाशित इस पुस्तक का एक-एक पृष्ठ पठनीय है, विचारणीय है, चिंतनीय है। पहले ही पृष्ठ में देश-विदेश के अनेकों मनीषियों के विचार ''माँ है खुली किताब'' के रुप में दिए गए हैं। अंतर्मना ने ''संस्कार दायिनी माँ'' से शुरु कर ''माँ-बेटी में मैत्री संबंधों के टिप्स'' तक लेखों के माध्यम से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को स्थान देने का प्रयास किया है जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण है। ''बेटी की माँ से अपेक्षाएँ'' में अंतर्मना ने एक बेटी के विचारों को अभिव्यक्ति देते हुए लिखा है कि मैं चाहती हूँ कि माँ अपने दकियानूसी खोल से बाहर निकलकर मुझसे फिल्मों की बातें करें, अखबार में छपी खबरों पर कुछ पूछे, कुछ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें। मेरे केरियर की सफलता पर चर्चा करे और भविष्य के सपनों में मेरी कल्पनाओं के अनुकूल रंग भरे। मेरे एकाकीपन को दूर करे। लेकिन 20वीं शताब्दी की महिलाओं से इस तरह की आशा नहीं की जी सकती थी लेकिन 21वीं शताब्दी में ऐसा हो सकता था मगर हुआ क्या सभी टी. वी. के बेतुके धारावाहिकों, मोबाईल-इंटरनेट के व्हाटप एप, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम की आभासी दुनियां की चंकाचौंध में हर परिवार आजकल बिखरा-बिखरा दिखाई देता है। खान-पान का बिगड़ता माहौल भी इसमें शामिल है। बेटी की माँ से अपेक्षाएं, भावुकता-एक कमजोरी, सौन्दर्यबोध जगाएँ, आधुनिकता इसमें नहीं, ब्लेकमेल होने से बचाएँ, जब आपकी बेटी कामकाजी हो आदि लेख काफी संवेदनशील हैं। ''प्रेम के रास्ते मुश्किल हैं'' में लेखक एक ऐसी हकीकत लिखते है जो मन को झकझोर देती है, असली बात तो यह है कि अब समाज अपेक्षाकृत अधिक उन्मुक्त हो गया है। ऐसे में टी.वी., सिनेमा, डिस्कोथेक, लेट नाइट पार्टियां, म्युजिकल नाइट्स, वैलेंटाइंस डे, डेटिंग और फ्रेंड सर्किल ने इन लड़कियों को समय से पहले ही 'बड़ा' बना दिया है। सह-शिक्षा के कारण और अंग्रेजी स्कूलों की पश्चिम परस्त संस्कृति ने लड़कियों को इतना अधिक माड बना दिया है कि वे स्वच्छन्द और उन्मुक्त आचरण को योग्यता और बड़प्पन की निशानी समझने लगी है। लेखक ने वैलेंटाइन संस्कृति के प्रेम शब्द की महिमा का दुरुपयोग होते देखकर तंज कसते हुए कहते हैं कि प्रेम करना कोई बुरा नहीं, प्रेम तो एक भावना है और भावनाओं की अभिव्यक्ति को भी माध्यम मिलना ही चाहिए। असल बात तो यह है कि प्रेम की पवित्रता को समझें और इस पवित्रता के बारे में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा - दिल न दीजिए कभी किसी नादान को।
जो जलाकर खाक कर दे आपके अरमान को।।

पुस्तक का अवलोकन करने के बाद ऐसा महसूस होता है अंतर्मना ने काफी बारीकियों से बेटियों के मनस्तत्व को समझने का प्रयास किया है जिसकी परिणति है मेरी बिटिया पुस्तक की रचना। पुस्तक में अंतर्मना ने कई उदाहरण भी दिए हैं जिसे पढ़कर माँ अपनी बेटी की मानसिकता को समझकर उसे फिसलने से रोक सकती है क्योंकि एक बार अगर चरित्र पर दाग लग जाए तो उसे मिटाया नहीं जा सकता। संपूर्ण भारतवर्ष में नंगे पांव भ्रमण करने वाले अंतर्मना से बहुत कुछ आशा की जा सकती है कि इस तरह के उनके संस्मरणों को अपने लेखन के माध्यम से समाज में फैल रही अपसंस्कृतियों को दूर करने का प्रयास कर सके। मुनि की चर्या बहुत कठिन होती है और दिन भर में एक बार आहार-पानी ग्रहण करना, अनेकों बार उपवास कर कठिन तपस्या को अंगीकार करने वाले, अपनी साधना और सामायिकी में व्यस्त रहने वाले अगर श्रावकों को किंचित भी समय दे पाते हैं तो उनकी वात्सल्यता के अलावा और कोई शब्द देने में मै असमर्थ हूँ।

मेरी बिटिया - कृतिकार अंतर्मना मुनि प्रसन्नसागर, प्रकाशकः भारतीय ज्ञानपीठ, मूल्य-280 रूपये।

शेष पृष्ठ 6 का.....

चारित्र को प्रमुखता दी जानी चाहिए। धार्मिक आयोजन सादगी पूर्ण होने चाहिए, स्वधर्मी के स्वाभिमान को सुरक्षित रखते हुए साधर्मी वात्सल्य को बढ़ावा मिलने से ही जैन समाज मजबूत होगा, क्योंकि आज महंगाई के इस दौर में दो-तिहाई जैन आबादी का, निम्न स्तर के नीचे या निम्न मध्यम वर्गीय श्रेणी में होना, जैन समाज की गौरव शाली परंपरा के लिए अच्छी मिसाल नहीं है, कोई आदर्श समाज संरचना नहीं है। जब जागे, तभी सवेरा, जैन समाज के उन्नत भविष्य की कामना के साथ।

किसी को जानने के लिए उसकी हंसी काफी है

- निर्मल जैन, दिल्ली (पूर्व जज)

हंसते हुए जो सफलता की सीढ़ियां चढ़ते है उनका गुणगान हर जगह होता है। जीवन की कठिन राहों पर गाते-गुनगुनाते गुजरना उन्हें बेहतर ढंग से आता है। ऐसे लोग गुलाब के फूलों की तरह कांटों के बीच भी मुस्कुराना जानते हैं। तभी तो संत कबीर का गए हैं ऐसी करनी कर चलो तुम हंसो जग रोय। हर समय हमारा प्रयास यही रहे कि मुश्किल पलों को हंसी और हालात को सुनहरे पलों में बदलते रहें। हंसते और मुस्कुराने की कोई उम्र नहीं होती नहीं। इसके लिए कोई अवसर होता है।

अक्सर देखा गया है एक साधारण सा मजदूर मेहनत मशक्कत करता हुआ हंसी का भंडार आसानी से समेटता रहता है। हंसी न खरीदने बेचने की वस्तु है न किसी से दान में प्राप्त की जा सकती है। इसे उपासना करके भी नहीं हासिल किया जा सकता है और न ही संतों के उपदेश में यह मिलती है। हंसी का फव्वारा हमारे अंदर ही फूटता है। जिस तरह से सूर्य की किरणों से कमल खिल उठना है वैसे ही सहज और स्वाभाविक शांत मन में हंसी का झरना पड़ता है। किसी विद्वान ने खूब कहा है कि अगर आप किसी इंसान की आत्मा के अंदर झांकना चाहते हैं, उसे जानना चाहते हैं तो आप उसे हंसते हुए देखे आपको बेहतर नतीजे मिलेंगे। अगर वह अच्छी तरह हंसता है तो एक अच्छा इंसान है। निश्चित रूप से जीवन जीना एक कर है लेकिन उससे भी बड़ी कला है हंसते हुए जीना। जो खुलकर हंसता है वही दीर्घायु होता है। वह अपने नजरिया से हर तरफ अच्छा ही देखा करता है। निष्काम हंसी कड़वाहट का मेल धोकर सुगंधित वातावरण का निर्माण करती है। प्रसिद्ध जीवन शास्त्री लिन यू तांग का कहना है यह जिंदगी संघर्षो से भरी हुई है। उसमें एक के बाद एक खींचतान लगी रहती है। वे क्षण बहुत कीमती होते हैं जो जीवन को गुदगुदा दें और हंसने पर मजबूर कर दें क्योंकि हंसना खुशियों का खजाना है। वह आदमी निर्धन नहीं है जो खुलकर रह सकता है संसार में रुदन तो सबके पास है अगर दूसरों को कुछ देना है तो हंसी से बड़ा दान कुछ नहीं। अगर हमें हंसना नहीं आता है तो हमारा चेहरा पेड़ की डाली पर उसे कली की तरह है जो फूल बने से पहले ही मुरझा जाती है। कोई कैसे भी हमें अपमानित क्यों न करें अगर हमारे पास हास्य का माधुर्य घोलने की कला है तो हम दुख के क्षणों को भी सहज आनंद में बदल सकते हैं। सात्विक हंसी अंतरंग की सही पहचान हुआ करती है। निर्दोष हंसी ठीक वैसी ही है जैसे अस्थिदान करते समय दधीचि के आधार पर रही होगी। विष का प्याला पीते हुए सुकरात के चेहरे पर खेलती होगी। बुद्धि सदा ही हृदय पर भारी पड़ती रही है इन दोनों हम जरूर से ज्यादा ही बुद्धिमान हो गए हैं तभी तो उन्मुक्त हंसी जैसी अनुपम खजाने से वंचित होते जा रहे हैं। हंसें अवश्य, पर ध्यान रहे कि वह कैकई और मंथरा की हंसी न हो। अहंकार में कर किसी का अपमान करने वाली हाँसी न हो। अलग-अलग भाषा संस्कृति के साथ जीने पर भी पूरा विश्व एक जैसी हंसी हंसना है। इसकी वजह है कि हंसी सब जगह एक ही है। हंसी एक दवा है। जब हम अपने दिल की गहराइयों से खुश होकर हंसते हैं तो ईश्वर भी प्रसन्न होता है।

आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज की अनमोल वाणी

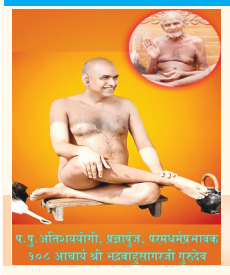

परम पूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशय योगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज

जीवन का एक मात्र उद्देश्य यह है कि हम जैसे हैं वैसे दिखें और जैसे बन सकते हैं, वैसे बनें

-: नमनकर्ता :-

दीपचन्द गंगवाल, बाराबंकी
श्रीमती नीता जैन, बाराबंकी
श्रीमती अनिता जैन, बाराबंकी
श्रीमती आशु जैन, बाराबंकी
मुदित जैन, प्रयागराज

दिलीप जैन, प्रयागराज ...
महेश जैन, बोदेगांव (महा.)
राकेश जैन, परभनी (महा.)
तुषार मनोज कुमार चौबाकर, परभनी महा.
प्रकाशचन्द्र साउजी, अम्बड़ (महा.)

परमपूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशययोगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज जी के चरणों में शत शत वन्दन

संकलनः R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

अहंकार में तीन गए - धन, वैभव और वंश: रावण, कौरव और कंस

डॉ. संतोष जैन काला (सीए)
गुवाहाटी

मानव सभ्यता के इतिहास में अहंकार को विनाश का प्रमुख कारण माना गया है। चाहे वह व्यक्तिगत स्तर पर हो या सामूहिक रूप में, अहंकार ने हमेशा ही बर्बादी का रास्ता तैयार किया है। ''अहंकार में तीन गए - धन, वैभव और वंश'' इस कथन को हम इतिहास के कुछ प्रमुख उदाहरणों से समझ सकते हैं, जैसे रावण, कौरव और कंस। इन तीनों के जीवन की कहानियाँ हमें अहंकार के परिणाम स्वरूप होने वाले विनाश का प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं। इस लेख में हम इन उदाहरणों के माध्यम से अहंकार के दुष्परिणामों पर विस्तार से चर्चा करेंगे, साथ ही कुछ जैन धर्म के उदाहरण और कोट्स भी शामिल करेंगे।

रावण: अहंकार का प्रतीक – रावण, जो लंका के राजा थे, अपने ज्ञान, शक्ति, और धनी वैभव के लिए प्रसिद्ध थे। उनके दस सिर और बीस भुजाएँ उन्हें असाधारण व्यक्तित्व प्रदान करती थीं। लेकिन उनका अहंकार ही उनकी बर्बादी का कारण बना। रावण का अहंकार तब चरम पर पहुँचा जब उन्होंने माता सीता का अपहरण किया। रावण ने सोचा कि वह अजेय है और कोई भी उसे हरा नहीं सकता। भगवान राम के साथ युद्ध में, रावण की सेना का विनाश हुआ और अंततः रावण स्वयं भी मारा गया। रावण का पूरा वंश समाप्त हो गया, और लंका का वैभव समाप्त हो गया।

उदाहरण:

1. **पराक्रम और बुद्धिमत्ता:** रावण एक ज्ञानी और पराक्रमी राजा थे। उन्होंने शिव तांडव स्तोत्र लिखा, जो आज भी पूजा में गाया जाता है। लेकिन उनका अहंकार उनके ज्ञान पर हावी हो गया और उन्होंने भगवान राम के साथ युद्ध किया।
2. **धन और वैभव:** रावण के पास अपार धन था। लंका सोने की बनी थी, जिसे 'स्वर्ण नगरी' कहा जाता था। लेकिन अहंकार के कारण यह सब नष्ट हो गया।
3. **वंश का नाश:** रावण के अहंकार के कारण उसका पूरा वंश समाप्त हो गया। उसके भाई कुम्भकर्ण, पुत्र मेघनाथ और अन्य रिश्तेदार भी युद्ध में मारे गए।

कोट्स -

कोट्स – 1. अहंकार पतन का कारण है - रावण का अहंकार उसे विनाश की ओर ले गया, जो इस कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
2. अहंकार व्यक्ति के विनाश का कारण बनता है।
रावण के जीवन की कहानी इस बात का प्रमाण है कि अहंकार का परिणाम हमेशा विनाशकारी होता है।

कौरव: अभिमान और दुर्भावना

महाभारत की कहानी में कौरवों का अहंकार और द्वेष भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कौरवों के अहंकार ने उन्हें पांडवों के खिलाफ युद्ध के लिए प्रेरित किया, जिसका परिणाम विनाशकारी था।

दुर्योधन और उसके भाइयों का अहंकार उन्हें पांडवों के खिलाफ साजिश रचने के लिए प्रेरित करता है। द्रौपदी का चीर हरण और पांडवों को वनवास में भेजना उनके अहंकार का परिणाम था। महाभारत के युद्ध में, कौरवों की पूरी सेना का विनाश हुआ और उनका वंश समाप्त हो गया।

उदाहरण:

1. **धन और सत्ता का मोह:** कौरवों के पास भी अपार धन और सत्ता थी लेकिन उनके अहंकार ने उन्हें अंधा कर दिया और उन्होंने पांडवों के साथ अन्याय किया।
2. **दुर्भावना और द्वेष:** कौरवों का अहंकार और पांडवों के प्रति उनकी द्वेष भावना ने महाभारत के युद्ध को जन्म दिया, जो पूरे वंश के विनाश का कारण बना।
3. वंश का नाशः कौरवों के अहंकार के कारण उनका पूरा वंश नष्ट हो गया। दुर्योधन और उसके सभी भाइयों की मृत्यु हो गई।

कोट्स -

1. अहंकार व्यक्ति को अंधा कर देता है। कौरवों का अहंकार उन्हें वास्तविकता से दूर ले गया और उनका विनाश हुआ।
2. अहंकार से बचना ही बुद्धिमानी है। अगर कौरव अपने अहंकार को त्याग देते तो उनका वंश और वैभव सुरक्षित रहता।

कंस: अत्याचार और अहंकार

कंस, मथुरा का राजा था और भगवान कृष्ण के मामा थे। उनका अहंकार और अत्याचार उन्हें विनाश की ओर ले गया।

कंस ने एक भविष्यवाणी के कारण अपनी बहन देवकी के सभी बच्चों को मार दिया, क्योंकि भविष्यवाणी के अनुसार देवकी का आठवां पुत्र उसका विनाश करेगा। कंस ने भगवान कृष्ण को मारने के लिए कई प्रयास किए, लेकिन अंत में भगवान कृष्ण ने ही उसे मार डाला।

उदाहरण –

1. **अत्याचार और भय:** कंस का अहंकार और भय उसे निर्दयता की ओर ले गया। उसने अपनी ही बहन के बच्चों को मार दिया।
2. धन और सत्ता का अहंकारः कंस के पास भी अपार धन और सत्ता थी, लेकिन उसका अहंकार और अत्याचार उसे विनाश की ओर ले गया।
3. वंश का नाशः कंस के अहंकार और अत्याचार के कारण उसका वंश समाप्त हो गया। भगवान कृष्ण ने उसे मार डाला और मथुरा को मुक्त किया।

कोट्स -

1. अहंकार व्यक्ति के पतन का कारण बनता है - कंस का अहंकार और अत्याचार उसे विनाश की ओर ले गया।
2. अहंकार का परिणाम हमेशा विनाशकारी होता है - कंस के जीवन की कहानी इस बात का प्रमाण है कि अहंकार का परिणाम हमेशा विनाशकारी होता है।

जैन धर्म में अहंकार का विनाशकारी प्रभावः जैन धर्म में अहंकार को आत्मा के लिए बहुत बड़ा दोष माना गया है। जैन धर्म के महान आचार्यों ने अहंकार के दुष्परिणामों के बारे में कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ दी हैं।

उदाहरण -

1. **भगवान महावीर:** भगवान महावीर ने अहंकार को आत्मा की शुद्धि के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा माना है। उन्होंने कहा कि अहंकार व्यक्ति को उसके सच्चे स्वभाव से दूर कर देता है।
2. **आचार्य कुन्दकुन्द:** आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने ग्रंथों में अहंकार को आत्मा की शांति और मुक्तिपथ का सबसे बड़ा शत्रु बताया है।
3. **राजा मेघरथ:** जैन धर्म में राजा मेघरथ का उदाहरण दिया जाता है जिन्होंने अपने अहंकार को त्याग कर अपनी सम्पत्ति और राज्य को छोड़कर तपस्या का मार्ग अपनाया।

कोट्स -

1. अहंकार आत्मा का सबसे बड़ा दुश्मन है। - आचार्य कुन्दकुन्द
अहंकार व्यक्ति को सच्चे ज्ञान और मुक्ति से दूर कर देता है।
2. अहंकार से मुक्ति ही सच्ची शांति का मार्ग है - भगवान महावीर
अहंकार से मुक्त होकर ही आत्मा अपनी शुद्धि और मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकती है।
3. अहंकार का त्याग ही आत्मा का उद्धार कर सकता है। - आचार्य हेमचन्द्र
अहंकार का त्याग करने से ही आत्मा को सच्ची शांति और मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

निष्कर्ष - रावण, कौरव, कंस और जैन धर्म के उदाहरण हमें यह सिखाते हैं कि अहंकार व्यक्ति के पतन का कारण बनता है। धन, वैभव और वंश, तीनों ही अहंकार के कारण नष्ट हो जाते हैं। इन कहानियों से हमें यह सीख मिलती है कि अहंकार से दूर रहकर ही हम सही मार्ग पर चल सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अहंकार से मुक्त रहकर ही हम सच्चे सुख और शांति का अनुभव कर सकते हैं। इतिहास के इन उदाहरणों से हमें यह समझना चाहिए कि अहंकार कभी भी सकारात्मक परिणाम नहीं लाता और इसका त्याग ही वास्तविक बुद्धिमानी है। जैन धर्म की शिक्षाओं के अनुसार, अहंकार का त्याग ही आत्मा को शुद्धि और मुक्ति की ओर ले जाता है।

जैन धर्म और समाज की संक्रमणता से रक्षार्थ

रमेश जैन तिजारिया

मैं गत अंकों में अपने सम्पादकीय द्वारा जैन समाज को जाग्रत करने के कई लेखों द्वारा निवेदन कर चुका और आज भी पुनः समाज से संतों के चरणों में अपील कर रहा हूं कि वर्तमान संक्रमण काल से जैन समाज जैन तीर्थ जनसम्पदा की रक्षार्थ अविलम्ब गहन चिन्तन मनन कर समाज की एकता बनाने का हर सम्भव प्रयास करना समय की पुकार है। हम एक होकर ही इस महामारी से धर्म एवं समाज को सम्मान द्वारा जीवित रख सकेंगे?

गजब हो रहा है कि इस लोकतंत्र में जैन तीर्थ यहां तक कि जैन साधुओं पर आक्रमण जैसे उपक्रम भी होने लगे हैं। इस सोशल मीडिया के युग में जैन साधुओं का विहार करना खतरे से खाली नहीं है, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि इतनी आसामाजिक घटनाओं और चैनलों के प्रसारण के बाद भी हमारा आत्म सम्मान क्यों नहीं जाग रहा है। यह सत्य है कि हम जैन आतंकित नहीं बन सकते हैं मगर सब कुछ सहते रहें यह भी जैन धर्म हमें नहीं सिखाता है।

क्या नहीं हो रहा है मंदिरों पर तोड़फोड़ और अनधिकृत कब्जे हो रहे हैं हमारी सम्पत्तियों को कोई भी हथिया लेता है और हम मूकदर्शक बहरे बनकर सह रहे हैं। जैन मंदिरों को विधर्मी मंदिर बनाया जा रहा है और हम कुछ नहीं कर रहे हैं। यह मिट जाने की निशानी है। हमने इतिहास में पढ़ा सुना है कि बीती सदियों में हमारे शास्त्रों की होली जलाई, हजारों सन्तों को विभिन्न तरीकों से जान से मार दिया गया, हजारों श्रावकों का नरसंहार किया गया मगर आज के पढ़े लिखे संसार में जनतंत्र में भी यह हो रहा है शर्मसार करने की बात है।

हम किसी पर प्रहार नहीं करें यह हमारा धर्म सिखाता है मगर हम अन्याय का प्रतिकार भी नहीं करें यह कहीं नहीं लिखा पढ़ा। अपनी रक्षार्थ प्रयास करना तो आवश्यक है। सबसे पहले हमारे विखंडित समाज के धर्म गुरूओं से अपील है कि सारे मतभेद भुलाकर एक सूत्र में बंध जायें क्योंकि हर सम्प्रदाय के साथ ही अन्याय हो रहा है। फिर समाज को अपने-अपने धर्म मनाने की स्वतंत्रता के आधार पर राष्ट्रीय संगठन स्थापित किया जाये क्योंकि संगठित आवाज को दबाना सम्भव नहीं है। ऐसा हमने देखा भी है जब-जब संगठित होकर हमने आवाज उठाई है तब-तब सरकार ने हमारी आवाज को मानकर निर्णय लिये हैं लेकिन हम मौन रहे तो कौन हमारी सुनेगा।

आपसी मतभेद अगर कोई हो भी जाये तो अपने स्तर पर ही सुलझा लें, बात बाहर नहीं जाये तो देखना संख्या में कम होने के बाद भी हमारी आवाज बुलन्द होगी। हमें एक काम और करना ही होगा कि जनहित के कार्य करना चाहिए, धन का व्यय आडम्बर आदि नहीं करने चाहिए क्योंकि जो हम दिखावा करते हैं वो सामने वाले के मन में ईर्ष्या उत्पन्न करता है। पहले जमाने में जैन बन्धु जनहितैषी कार्य अधिक करते थे उसका ही परिणाम है आम जनता की सहानुभूति हमें प्राप्त होती थी।

मुझे वह शब्द आज भी याद है जब हम कोटा रहते थे तब किसी मांग को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह जी शेखावत से निवेदन करने कोटा से आए थे तब शेखावत जी ने कहा था कि आप जैन समाज के लोग मांग ही मांग रखते हो कभी जनहितैषी कार्यों में धन का सदुपयोग करो तब जनता के मन में आपके प्रति सहृदयता पैदा होगी वार्ता तो लम्बी थी छोटे में प्रगट करने का प्रयास है सार की बात थी कि मंदिर और कल्याणकों चातुर्मास में अपव्यय से बाहर आकर कुछ काम करो।

जन्म मरण तो पर्याय का स्वभाव है उसमें अपना और नया क्या है?

सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी का वर्षायोग णमोकार तीर्थ पर

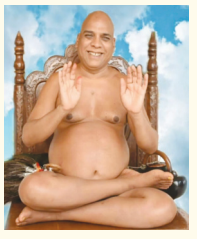

सुविख्यात दिगंबर जैन मुनि-प्रज्ञाश्रमण, रास्ट्रसंत, ग्रंथकार, णमोकार तीर्थ प्रणेता, सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी का 2024 का वर्षायोग, नासिक जिले में चांदवड़ तहसील के मालसाने ग्राम में अतिशय क्षेत्र णमोकार तीर्थ में होना निश्चित है। आचार्य मुनि देवनंदीजी वास्तु चिंतामणी, देवशिल्प, बोलती कथाएं, आचार्य शान्तिसागर जी आदि अनेक ग्रंथ का लेखन किया है। आपकी हिंदी भाषा अत्यंत प्रभावी, सुमधुर एवं श्रवणीय होती है। आपके मंगल प्रवचन समूचे राष्ट्र में सुने जाते हैं।

– एम. सी. जैन, संवाददाता

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain
(Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

कोटा में मुनि श्री आदित्य सागर जी मुनिराज ससंघ का चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश

श्रद्धालुओं ने पलक पांवड़े बिछाकर किया भावभीना अभिनंदनः गुरुदेव के पाद पृच्छालन में उमड़ा सकल समाज, भव्य शोभायात्रा में लगे गुरूदेव के जयकारे

चरित्र, तप, मैत्री और समता को जागृत करने का समय है चातुर्मास - मुनि श्री आदित्य सागर

पारस जैन पार्श्वमणि,संवाददाता जैन गजट

कोटा। चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन समाज समिति के द्वारा श्रमण श्रुतसंवेगी श्री 108 आदित्य सागर जी मुनिराज संघ का भव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश बूंदी रोड स्थित चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर रिद्धिसिद्धि नगर कुन्हाडी में हुआ। मंदिर अध्यक्ष राजू गोधा व महामंत्री पारस कासलीवाल ने बताया कि केशवराय पाटन तिराहे मार्ग त्रिकुटा से श्रमण श्रुतसंवेगी श्री 108 आदित्य सागर जी मुनिराज, अप्रमित सागर और मुनि सहज सागर महाराज संघ का मंगल प्रवेश भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। शोभायात्रा में सकल दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष विमल जैन नांता, राजमल पाटोदी, कार्याध्यक्ष जे. के. जैन व प्रकाश बज, विनोद जैन टोरडी, मनोज जैन आदिनाथ, नरेश जैन वेद, अशोक पहाड़िया, पारस जैन सहित कई लोग उपस्थित रहे। प्रतिदिन आध्यात्मिक विशुद्ध ज्ञान पावन वर्षायोग के तहत धर्मसभा होगी। मुख्य पाद प्रच्छालन का सौभाग्य जम्बू कुमार, पारस कुमार बज परिवार व शास्त्र भेंट करने का गौरव निर्मल व नीरज कुमार अजमेरा परिवार को मिला। पाद प्रच्छालन में उमड़ा सकल समाज - चातुर्मास आयोजन समिति के अध्यक्ष टीकम चंद पाटनी व पंकज खरोड़ ने बताया कि पावन वर्षायोग में रविवार को गुरुदेव संघ का मंगल प्रवेश केशोरायपाटन तिराहे मार्ग से प्रारंभ हुआ। 108 स्वागत द्वारा, रंगोली, घोड़े व जैन ध्वज पताका लिए हुए नन्हें बालक अगवानी कर रहे थे। उनके पीछे 51 कारें व 51 मोटर साईकिल धर्म संदेश देती हुई चल रहीं थीं। समिति के संजय लुहाड़िया व पारस बज ने बताया कि ट्रैक्टर व ट्रॉली पर जीवंत झांकी से महावीर के संदेश, पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती चल रही थीं।

अशोक व संजय सांवला ने बताया कि गुरुदेव के चरणों को धोने व चरण स्पर्श के लिए समाज के लोगों में होड़ लगी थी। मार्ग में जगह-जगह पाद प्रच्छालन किया और गुरुदेव के चरण वंदना कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया गया। जयकारा गुरूदेव का - टीकम चंद पाटनी ने बताया कि श्रमण श्रुतसंवेगी श्री 108 आदित्य सागर जी मुनिराज, अप्रमित सागर और मुनि सहज सागर के मंगल आगमन पर भव्य शोभायात्रा में आधा दर्जन दिव्य घोष महिला बैंड अपनी सुर लहरियां बिखरते जा रहे थे। उनके पीछे महिला व पुरूष गुरूदेव का जयकारा लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे और गुरूदेव की चरणों की धूल सिर लगाते नजर आ रहे थे।

मार्ग में वात्सल्य ग्रुप द्वारा शुद्ध आहार की झांकी सजाई गई। चक्की से आटा, हाथों के मसाले व कुएं से पानी निकालने का प्रदर्शन किया। पदम प्रभु बालिका मंडल द्वारा भी विशेष झांकी सजाई गई। सखी सुलोचना ग्रुप द्वारा पंचपरमेष्ठी की झांकी सजाई गई।

पुण्य उदय होने पर चातुर्मास में आते है - श्रमण श्रुतसंवेगी श्री 108 आदित्य सागर जी मुनिराज संघ ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब मनुष्य का पुण्य उदय होता है तो वह चातुर्मास में आते हैं। उन्होंने कहा कि यह अवसर पुण्य कर्मों के कारण ही प्राप्त होता है। उन्होंने चातुर्मास की व्याख्या करते हुए कहा कि चरित्र, तप, मैत्री व समता को जागृत करने का समय चातुर्मास है। यह समय हमें अपने अंदर जिनवाणी को उतारना है। उन्होंने कहा कि यह चातुर्मास अभूतपूर्व, आध्यात्मिक व ऐतिहासिक होगा। समस्त कोटा के लोग जुड़कर इसमें लाभ ले सकते हैं। शहर में विभिन्न स्थानों पर धर्मसभा आयोजन भी होगा। उन्होंने भक्तों से कहा कि नगर में एक से अधिक संतों का चातुर्मास हो तो यह और भी आनंददायक है।

प्रतिभावान छात्र छात्राओं का सम्मान साथ ही विद्यालय में भेंट किया वाटरकूलर

सुजानगढ़। निकटवर्ती ग्राम ठरडा के उच्च प्राथमिक विद्यालय सुजानगढ़ में स्वर्गीय आसूलाल जी एवं अमराव देवी गंगवाल की पुण्य स्मृति में छात्र छात्राओं हेतु वाटर कूलर भेंट श्री नथमल जी रवि कुमार जी अयान गंगवाल परिवार गुवाहाटी, बैंगलुरू, डेह द्वारा व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह स्वर्गीय अमराव देवी बगड़ा की पुण्य स्मृति में श्री निहालचंद जी महेंद्र कुमार जी महेश कुमार जी बगड़ा ईटानगर के सौजन्य से व सुजलांचाल विकास मंच समिति के तत्वाधान में आयोजित हुआ।

समिति के उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद पाटनी ने आयोजन विषयक जानकारी देते हुए बताया कि सर्वप्रथम विद्या की देवी मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का आगाज हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर परिषद की सभापति श्रीमती नीलोफर गोरी ने की व मुख्य अतिथि के रूप में भामाशाह श्री महेश कुमार जी सुनीता देवी बगड़ा थे व विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दिगम्बर जैन समाज के उपाध्यक्ष श्री लालचंद जी बगड़ा, समाजसेविका श्रीमती मीनू देवी बगड़ा, समिति अध्यक्ष श्रीमती उषा देवी बगड़ा, सचिव विनीत कुमार बगड़ा, श्रीमती मंजू देवी बाकलीवाल मंचासीन थे। इस दौरान 2023/24 के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सभापति ने बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ संस्कारयुक्त ज्ञान के साथ लक्ष्य प्राप्ति का आह्वान किया। समिति अध्यक्ष श्रीमती बगड़ा ने कहा कि समिति व गंगवाल व बगड़ा परिवार के सेवा कार्य सराहनीय है तथा कहा कि पैसा सबके पास होता है लेकिन दीन दुखियों की सेवा करके पुण्य कमाना सबसे बड़ी कमाई है। भामाशाह श्री महेश कुमार बगड़ा ने विद्यालय में हो रहे विकास कार्यों की सराहना करते हुए इसे स्वयं के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। विद्यालय के कार्यवायक प्रधानाध्यापक रामनिवास बाकोलिया ने शाला प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की व सहयोग के लिए गंगवाल व बगड़ा परिवार सहित समिति का विद्यालय परिवार द्वारा प्रशंसा पत्र भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान आगंतुक अतिथियों द्वारा विद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया गया। अतिथियों का स्वागत विद्यालय परिवार के सुल्तान सिंह, कमल जाखड़, सुमन बुगलिया, सीमा मीणा, संगीता शर्मा, अभिव्यक्ति शर्मा, सुनीता गढ़वाल ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सुरेंद्र कुमार वर्मा ने किया।

सुजानगढ़ से महावीर प्रसाद पाटनी की रिपोर्ट।
- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

SUPERCON
Durable, Hygienic, Strong Quality Products
Take a Step towards better hygine..
Water Tanks

• Easy Installation • Easy To Clean • Safe for Drinking Water

Septic Tanks
• No Maintenance Required
• No Construction Required
• Keeps Environment Clean

Solid Plastic Chakhats
Available in Sizes & Design As Per Requriments
• Water, Termite and Warping Proof
• Maintenance Free • Life 50+ Years

Jain Agencies
17 A, Neel Cottage Maldhaiya, Varanasi 221002
email: jainagencies3@gmail.com +91 88874 58519, 9415225395

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी चरण स्पर्श, श्री भक्तामर स्तोत्र का कौन सा काव्य आंखों से सम्बन्धित होता है क्योंकि मेरी आखों की रोशनी लगातार घट रही है - नरेन्द्र जैन, अकोला (महा.)

उत्तर - नरेन्द्र जी श्री भक्तामर स्तोत्र का 25वां काव्य आंखों से सम्बन्धित होता है। डाक्टरी चिकित्सा के साथ-साथ रोजाना 25 बार पढ़ना चाहिये।

प्रश्न 2. पितृ दोष क्या मेरी कुंडली में है? मुझे किसी ने बताया है - रजनीश जैन, अहमदाबाद

उत्तर - रजनीश जी, जैन आगम में पित दोष का कोई स्थान नहीं है इसलिये आप परेशान न हों।

प्रश्न 3. गुरूजी, मै काफी समय से कम्प्यूटर का कार्य करता हूँ, मगर कोई तरक्की नहीं हो पा रही है, ऐसा कब तक चलेगा - अरविन्द, हिसार

उत्तर - अरविन्द जी, एक साल पश्चात आपकी कुंडली में नीच के गुरू की दशा समाप्त हो जायेगी उसके बाद बड़ा परिवर्तन स्वतः हो जायेगा।

प्रश्न 4. मेरे शरीर में सूजन, दर्द रहता है। काफी इलाज किया मगर लाभ नहीं हो रहा - अंकिता, दिल्ली

उत्तर - अंकिता जी, आपको चाहिये श्री भक्तामर स्तोत्र का 45वां काव्य रोजाना 45 बार पढ़ें, पन्ना रत्न का लॉकेट गले में बुधवार को धारण करें तथा अच्छे चिकित्सक से इलाज करायें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062,

आचार्यश्री ने हर किसी को दिल खोलकर दिया है

- आर्यिकारत्न श्री आदर्शमति माताजी

आचार्य श्री का 57 वां दीक्षा दिवस एवं आर्यिकारत्न श्री आदर्शमति माताजी का 33वां दीक्षा दिवस मनाया गया

कुंडलपुर, दमोह। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र जैन तीर्थ कुंडलपुर में विश्व वंदनीय युग श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 57 वां मुनि दीक्षा दिवस एवं आर्यिकारत्न मां श्री आदर्शमति माताजी का 33वां दीक्षा दिवस, आर्यिकारत्न श्री आदर्शमति माता जी के ससंघ सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः भक्तामर महामंडल विधान, आचार्य छत्तीसी महामंडल विधान, पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांतिधारा, पूजन हुई। 57 दीपों से आचार्य श्री की महाआरती की गई। इस अवसर पर आर्यिकारत्न श्री आदर्शमति माताजी ने मंगल प्रवचन देते हुए कहा कि आज के दिन ही आचार्य विद्यासागर युग का सृजन हुआ था। विद्यासागर युग का सृजन करने वाले गुरु नाम गुरु श्री आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, सृजन मतलब दीक्षा, दीक्षा का मतलब संकल्प। अषाढ़ सुदी पंचमी को सन 1968 में ब्रह्मचारी विद्याधर मुनि विद्यासागर जी बन गए थे। गुरु नाम गुरु ज्ञानसागर जी महाराज जी इनको बनाने वाले और समयसार जैसे महान ग्रंथ को जीवंत बनाने वाले, मूलाचार ग्रंथ को जीवंत बनाने वाले युगद्रष्टा गुरु नाम गुरु ज्ञानसागर जी महाराज थे। आज आचार्य भगवन का 57 वां दीक्षा समारोह है। सब कुछ है लेकिन सब कुछ नहीं भी है जिसके लिए जिसके द्वारा यह धरती फूल रही थी फल रही थी। धरती में धर्म पल्लवित हो रहा था। वो आज कहीं भी नहीं है यहां परंतु फिर भी हम कैसे भूल सकते हैं। हमें भूलना भी नहीं है। आज भी आचार्य श्री जी हर दिल में विचरण कर रहे हैं। किसी ने कहा है पत्थर कट सकता है, कागज फट सकता है, कागज पर लिखा नाम कट सकता है, पत्थर पर लिखा नाम कट सकता है लेकिन जिसके हृदय में आचार्य श्री का नाम लिखा है वह किसी भी भव में कभी नहीं मिट सकता है। वह ऐसे ही थे वह ऐसे ही इस धरती में रहे, वह कभी किसी को बोझ नहीं बने, वह कभी किसी को भारी नहीं बने बल्कि वह जहां भी विचरण करते थे वहां की धरती फलीभूत हो जाती थी, वहां की धरती प्रसन्नता से भर जाती थी। ऐसे परम पूज्य आचार्य भगवन हम सभी के लिए बड़े बाबा के दरबार में बहुत विशेष रूप से याद आ रहे हैं। वैसे तो लगभग पांच माह पूरे होने को हैं। आचार्य भगवन हम सबको छोड़कर चले गए। हमें वह दृश्य याद आ रहा है जब राम को कैकई ने 14 वर्ष का वनवास दिया। राम जब अयोध्या छोड़कर जा रहे थे तो अयोध्या वासियों ने राम को रोकने की कोशिश की, राम नहीं रुके। उनके साथ-साथ पहुंचे लोग सरयू तट के पास उन्होंने रात्रि व्यतीत की तो वह ब्रह्म मुहूर्त में ही सबको सोता छोड़ कर चले गए। ऐसे ही आचार्य श्री सबके दिल में वास करते थे सब की आंखों में विचरण करते थे, सबके मन में छाए थे। सब सोचते थे। अब आचार्य श्री का दीक्षा दिवस मनाने कहां जाएंगे। आज हर किसी का मन कहां जाएं, आचार्य श्री को कहां खोजें आचार्य श्री हमें कहां मिलेंगे। हमने सोचा बड़े बाबा के दरबार में आचार्य श्री मिलेंगे क्योंकि आचार्य श्री के 25 वें रजत महोत्सव पर हमें भी आचार्य श्री के कर कमलों से पांच महाव्रत को धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। 32 वर्ष व्यतीत हुए 32 वर्षों में न आचार्य श्री का सानिध्य मिला। 33वें वर्ष में प्रवेश करते हुए बड़े बाबा तो मिले हैं लेकिन आचार्य श्री नहीं मिले। आचार्य श्री ने हर किसी को दिल खोलकर दिया है।

आस्था अलया बनी सीए

ललितपुर। सक्षम जिलाध्यक्ष अक्षय अलया की पुत्री आस्था अलया ने चार्टर्ड एकाउन्टेंट सीए की डिग्री हासिल कर परिवार एवं समाज को गौरवान्वित किया। प्रारम्भिक परीक्षा एसडीएस कान्वेंट के उपरान्त संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के आशीर्वाद से स्थापित प्रतिभा स्थली जबलपुर में कक्षा 6 से 12 तक अध्ययनरत रही।

- अक्षय अलया

शादी के 25 वर्ष पूर्ण होने पर बहुत बहुत बधाई

गुल हो गुलशन हो गुलफाम हो शादी की सालगिरह की बधाई आपको बेशुमार हो

राजेश जी निकिता जी कोठारी, पाण्डिचेरी

कैलाशचंद जी गोधा-भावना की सुपुत्री निकिता जी एवं किरण देवी कोठारी-स्वर्गीय गणपत लाल जी कोठारी के सुपुत्र राजेश जी कोठारी की शादी की 25वीं सालगिरह पूर्ण होने पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

श्रीमती अर्चना भरत कोठारी पाण्डिचेरी मो. 9677554677

डोलफिन वाटरप्रुफिंग

एडवांस टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

DR. FIXIT Pidilite WATERPROOFING EXPERT

Rajendra Jain
80036-14691
Dr. Fixit Authorised Project Applicator

DOLPHIN WATERPROOFING
116/183, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता

वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन

देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

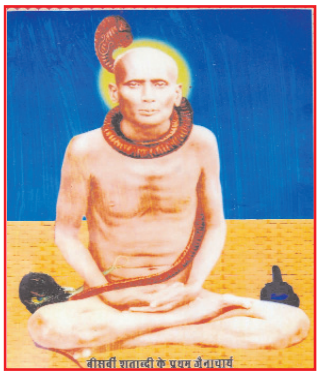

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष 2024 पर उनके चरणों में शत शत नमन वंदन

मृत्यु तुमको छल न पाई विषधरों द्वारा डरा कर, धन्य तुम, चारित्र-चूड़ामणि तपोनिधि शांतिसागर।

प्रेरणा

वीरेन्द्र हेगड़े
धर्मस्थल

अशोक पाटनी
(आर.के.मार्बल्स)
मदनगंज-किशनगढ़

चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शान्तिसागर स्तवन

- रचयिता - श्री शांतिलाल बड़जात्या 'जैन रत्न', अजमेर

शांति-वीर-नगर' मन भावन, 'महावीर जी' में सुखदाय, जहाँ विराजित 'शांतिनाथ' औ, चौबीसी भी मंगलदाय।।8।।
'गोमट्टगिरी इन्दौर नगर' में, 'विद्यानंद आचार्य' सुजान, 'कुंद-कुंद' संग 'शांति सिन्धु' की प्रतिमा थापी वहां महान।।9।।
'शिखरजी के प्रशस्ति पट्ट' को, सकल जगत है सिर नाता। 'लाल मंदिर देहली' में कीर्ति पट्ट यशोगथा गाता।।10।।
'खड्गासन प्रतिमा कुंभोज' में शांति सिन्धु' की बड़ी विशाल। 'आचार्य वर्धमान' प्रेरणा से किशनगढ़ में स्मारक बना विशाल।।11।।
'पुलक सिन्धु' प्रेरणा से बन गया 'उदयपुर' में सभागार। लोकार्पण श्री 'तरूण सिन्धु' सान्निध्य हुआ अति मंगलकार।।12।।
प्रतिमा 'शांति सिन्धु' की थापी, और बनाया 'हॉल' विशाल। 'अवंतिका' में 'प्रज्ञा सागर' ने दिखलाया बड़ा कमाल।।13।।
अब जन्म भूमि 'भोजग्राम' में बना रहे है शान्ति सागरम् तीर्थ तीर्थ विशाल। अहो भाग्य है पुण्य धरा का, सब जन नमते अपने भाल।।14।।

क्रमशः अगले अंक में जारी.....

-: नमनकर्ता :-

प्रदीप चूड़ीवाल
निखार फैशन्स
जयपुर

वीरेन्द्र हेगड़े
धर्मस्थल

अशोक पाटनी
(आर.के.मार्बल्स)
मदनगंज-किशनगढ़

हीरा लाल बैनाड़ा
आगरा

राजेन्द्र कटारिया
अहमदाबाद

विवेक काला
जयपुर

प्रकाश पाटनी
शिलोंग

श्रीपाल सबलावत
जयपुर (रेडी प्रिंट)

नरेन्द्र कुमार
पाण्ड्या, जोरहट

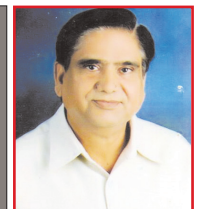
धर्मचन्द
पहाड़िया

जयपुर के नमनकर्ता

सुधांशु
कासलीवाल

श्रीमती रितु
कासलीवाल

नरेन्द्र जैन
निखार

घेवर चन्द जैन
(कमिश्नर आयकर)

ऋषभ कुमार सेठी
(अध्यक्ष तिलकनगर)

नवरत्नमल पाटनी
अष्टम प्रतिमाधारी

कुशल ठोल्या

श्रीमती
मधु ठोल्या

सुनील पहाड़िया
अक्षत बिल्डर्स

श्रीमती निशा
पहाड़िया

किशनगढ़ के नमनकर्ता

विजय कुमार
कासलीवाल, कुचील वाले

माणकचन्द
गंगवाल

संजय
पापड़ीवाल

विनोद कुमार
पाटनी

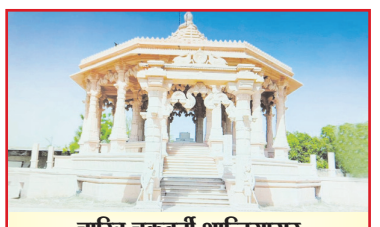
चारित्र चक्रवर्ती शान्तिसागर
स्मारक ट्रस्ट

कैलाशचन्द पाटनी

भागचन्द बोहरा

हीरालाल बाकलीवाल
खन्डाच वाले

दीपक रारा

ऋषभ कुमार पचोरी,
अध्यक्ष-चातुर्मास
कमेटी पारसोला

नरेन्द्र कुमार जैन चित्तौड़ा
(दो प्रतिमाधारी)
बांसवाड़ा

दिनेशचन्द कासलीवाल
(प्रमुख समाजसेवी)

श्रीमती किरण काला
गुवाहाटी

अजित चांदुवाड़
गुवाहाटी

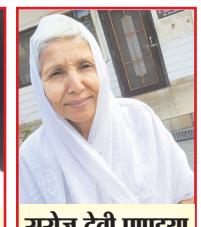
सरोज देवी पाण्ड्या
गुवाहाटी

मणीन्द्र जैन
दिल्ली

पवन मोदी
कोलकाता

अशोक चूड़ीवाल
बरपेटारोड

महावीर जी बोहरा
आनन्दपुरकालू

जोरहाट के नमनकर्ता

विमल कुमार
पाटनी

शिखरी लाल जी
चांदुवाड़

श्रीमती मंदी
चांदुवाड़

श्री विनोद कुमार
झांझरी

श्रीमती संतोष देवी
झांझरी

डीमापुर के नमनकर्ता

अनिल कुमार
टोंग्या

शिखरचन्द
बाकलीवाल

स्व. फूलचन्द जी
झांझरी

श्रीमती डगली देवी
झांझरी

धर्मचन्द पाटनी
शिवसागर

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

श्री विद्या विनोद काला मेमोरियल ट्रस्ट जयपुर के तत्वावधान में

कैंसर जांच आपके द्वार

(निशुल्क जांच एवं जागरूकता शिविर)
दिनांकः रविवार 21 जुलाई 2024
समयः प्रातः 9:00 से दोपहर 3:00 तक
स्थानः श्री दिगम्बर जैन मंदिर यति यशोदानंदजी, 342, चौड़ा रास्ता, जयपुर

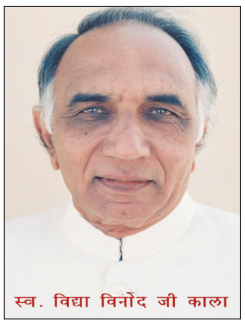
स्व. विद्या विनोद जी काला

स्व. विद्या विनोद काला प्रणेता स्वप्नदृष्टा एवं संस्थापक प्रबंध न्यासी भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर की 26वीं पुण्य तिथि के अवसर पर जयपुर जैन सभा समिति, श्री दिगम्बर जैन मंदिर यति यशोदानंदजी परिवार, जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति, श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा के सहयोग एवं भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर के सानिध्य में शिविर में की जाने वाली निःशुल्क जांचें (डॉक्टर परामर्श द्वारा) - मैमोग्राफी (स्तन जांच हेतु), पंप स्मीयर टेस्ट (गर्भाशय जांच हेतु), एक्स-रे (फेफड़ों की जांच हेतु), सीए 125 (ओवरी जांच हेतु), पीएसए (प्रोटेस्ट जांच हेतु), अन्य रक्त परीक्षण

निम्न में से कोई भी लक्षण हो तो जांच अवश्य करवाएं- मुंह या गले में नहीं भरने वाला छाला, कुछ भी निगलने में दिक्कत होना, आवाज में परिवर्तन, शरीर के किसी भी भाग में गांठ, स्तन में गांठ व आकार में परिवर्तन, लंबे समय से खांसी या कफ में खून, मल द्वार या मूत्र द्वार से खून आना, शौच की आदत में परिवर्तन, वजन का बेवजह कम होना

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें- संजय जैन 9928051512

पूर्वोत्तर की धरा पर इस वर्ष 6 जगहों पर चातुर्मास

दुनिया का सबसे बड़ा चार माह तक चलने वाला महोत्सव साधु-संतों का वर्षायोग होता है। जैन साधु-संत 12 महीने में आठ महीने विहार करते हैं। बरसात के समय जीवों की उत्पत्ति व हरियाली होने के कारण जीवों की रक्षा के लिए एक जगह रूककर अपनी साधना करते हैं। वह समय चार महीने का होता है। इसलिए उसे चौमासा, चातुर्मास या वर्षायोग कहते हैं। वर्षायोग के अन्तर्गत रक्षाबंधन, दशहरा, पर्यूषण पर्व, सोलहकारण, दीपावली आदि अनेक पर्व आते हैं।

चातुर्मास किसी एक व्यक्ति के पुण्य से नहीं बल्कि पूरी समाज के सामूहिक पुण्य कर्म के उदय से मिलता है। साधु-साध्वियां वहीं चातुर्मास करते हैं जहां श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और त्याग की भावना होती है। चातुर्मास भीड़ इकट्ठी करने के लिए नहीं होता। भीड़ तो एक मदारी भी इकट्ठी कर लेता है। चातुर्मास भीड़ से बचकर आत्म साधन, प्रभु आराधना, समाज उत्थान और संस्कारों की रक्षा के लिए होता है। अति हर्ष का विषय है कि इस बार पूर्वोत्तर की पुण्य धरा पर निम्न छः जगहों पर **चातुर्मास संपन्न होने जा रहे हैं** - डीमापुर (नागालैंड, 9 पिच्छी) - आचार्य 108 श्री प्रमुख सागर जी महाराज, श्रमण मुनि 108 श्री प्रभाकर सागर जी महाराज, श्रमणी आर्यिका 105 प्रीति श्री माताजी, क्षुल्लक 105 श्री प्रगुण सागर जी महाराज, क्षुल्लक 105 श्री परमानन्द सागर जी महाराज, क्षुल्लिका 105 आराधना श्री माताजी, क्षुल्लिका 105 परमसाध्या श्री माताजी, क्षुल्लिका 105 परमदिव्यता श्री माताजी एवं क्षुल्लिका 105 परम शांता श्री माताजी एवं संघस्थ बीना दीदी, पायल दीदी एवं अशोक भैया।

डिब्रूगढ़, असम (1 पिच्छी) - श्रमण मुनि 108 श्री अरिजीत सागर जी महाराज, खटखटी, असम (1 पिच्छी), श्रमणी आर्यिका 105 श्री रतनमती माताजी, नाहरलागुन, इटानगर (अरूणाचल प्रदेश 2 पिच्छी)

जोरहाट, असम (6 पिच्छी) - श्रमणी आर्यिका 105 प्रतिज्ञा श्री माताजी एवं श्रमणी आर्यिका 105 प्रेक्षा श्री माताजी, परम पूज्य आर्यिका रत्न 105 श्री गरिमा मती, 105 श्री गंभीर मती माताजी, 105 श्री त्याग मती माताजी, 105 श्री दयांशूमति माताजी, 105 श्री विख्यातमती माताजी, क्षुल्लिका 105 श्री चंदनमती माताजी एवं संघस्थ बा. ब्र. उन्नती दीदी।

दिसपुर, असम (2 पिच्छी) - श्रमणी आर्यिका 105 परीक्षा श्री माताजी एवं 105 परमाध्या श्री माताजी।

ज्ञातव्य हो धर्म प्रभावना हेतु परम पूज्य आचार्य 108 श्री प्रमुख सागर जी महाराज (13 पिच्छी) के संघ का उक्त तीन जगह (दीमापुर, नाहरलागुन एवं दिसपुर) चातुर्मास चल रहा है। पूर्वोत्तर की पुण्य धरा पर चातुर्मास करने जा रहे हमारे जिनशासन के सभी साधु-साध्वी अपने चातुर्मासिक स्थल पर पहुंच चुके हैं/पहुंच रहे हैं।

भारतवर्ष में विराजमान सभी साधु-साध्वियों को श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी शत शत नमन करते हुए पूर्वोत्तर **सहित सभी जगह चातुर्मास कर रहे साधु** - साध्वियों के निर्विघ्न, धर्ममय एवं ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्नता की कामना करती है।

- श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी (असम)

मंगल विहार

दिल्ली, 7 जुलाई 2024। परम पूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के सुशिष्य मुनि श्री विशुभ्र सागर जी महाराज 3 पीछी का मंगल विहार द्वारिका दिल्ली से बड़ौत चातुर्मास हेतु हुआ। संघ का चातुर्मास धर्म नगरी बड़ौत उ. प्र. में होने जा रहा है।

- वात्सल्य मूर्ति निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी महाराज (ससंघ) का शहपुरा भिटौनी में 10.07.24 को मंगल प्रवेश हुआ।

-अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ का चल रहा है मंगल विहार कुंजवन उदगाँव से कुलचारम हैदराबाद की ओर।

आचार्यश्री निर्भयसागर जी ससंघ की वर्षायोग की कलश स्थापना एवं मुनि दीक्षा समारोह

पुनीत जैन

विश्व की सबसे बड़ी 51 फीट पद्म प्रभु भगवान की पद्मासन प्रतिमा के समक्ष चौथी बार जैनेश्वरी मुनि दीक्षा एवं आचार्य श्री, मुनिश्री इद्रदत्तसागर, क्षु. श्री दत्तसागर ससंघ का पावन वर्षायोग श्री दिगम्बर जैन तपोवन तीर्थ, बहेरिया तिगड्डा, एन.एच. 26, सिद्धगुवां, सागर में दिनांक 25 जुलाई, 2024 दिन गुरूवार को सुबह 8 बजे से सम्पन्न हो रहा है। आप समस्त धर्मानुरागी श्रावक श्रेष्ठी इस महोत्सव में सादर आमंत्रित है। आप सभी 25 जुलाई, 2024 के इस महोत्सव में अवश्य पधारें और इस जैनेश्वरी दीक्षा के साक्षी बनकर पुण्यार्जन करें।

महासभा महाराष्ट्र की ओर से श्री निर्मल कुमार जी सेठी को 85 वें जन्म दिवस पर नमन

जिनका नाम निर्मल, मन निर्मल, तन निर्मल, काम निर्मल, ऐसे हमारे बाबूजी निर्मल कुमार जी सेठी (बाबूजी) के 85 वें अवतरण दिवस पर त्रिवार नमन। जिनके ही सतत प्रयत्न एवं मार्गदर्शन से अनेक तीर्थों का विकास हुआ है, सैकड़ों प्राचीन तीर्थ जिनके मगदर्शन से पुनः स्थापित हुए, जो हमेशा युवाओं के प्रेरणास्त्रोत थे, जैन समाज के आधार स्तम्भ थे ऐसे बाबूजी श्री निर्मल कुमारजी सेठी साहब हम सबको 27 अप्रैल 2021 को छोड़कर चले गए लेकिन उनकी स्मृतियाँ अनंत समय तक हम सबके बीच में जीवित रहेगी। ऐसे महानायक को महाराष्ट्र प्रांत तीर्थ संरक्षिणी महासभा परिवार की ओर से उनके 85 वें अवतरण दिवस पर बारंबार नमन है। नमनकर्ता - वर्धमान पाण्डे, अध्यक्ष, महावीर ठोले महामंत्री एवं समस्त कार्यकारिणी मंडल।

महासभा के ट्रस्टी विकास जैन लखनऊ कार्यालय में

लखनऊ, 29 जून। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के उपाध्यक्ष और श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा महासभा के प्रति समर्पित धर्मनिष्ठ युवा विकास जी जैन सेठी गत दिनांक 29 जून को श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, जैन गजट कार्यालय में पधारे और कार्यालय की गतिविधियों का अवलोकन कर प्रसन्नता जाहिर की।

मंगल कलश स्थापना समारोह

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर की पावन धरा पर मुनि श्री 108 महिमासागर जी महाराज ससंघ का 19वां पावन वर्षायोग-2024 शनिवार 20 जुलाई, 2024 को दोपहर 2.15 बजे से होगा। आयोजक - प्रबंध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर एवं सकल दिगम्बर जैन समाज, जयपुर

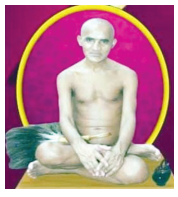

नन्दीश्वर दीप लालघाटी की ओर बढ़ते कदम

गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज के परम शिष्य प. पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज भक्तामर वाले बाबा ससंघ 19 पिच्छी सहित का मंडीदीप से लालघाटी भोपाल के लिए चल रहा है मंगल पद विहार।

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।